Class:	**B.A. 2 year**	**Course Code:**	**MUSA202PR**
Subject:	**Music (Vocal/Instrumental)**	**Course Name:**	**Stage Performance**

MUSIC
(Stage Performance)

Lesson : 1 - 13

Dr. Mritunjay Sharma

Centre for Distance & Online Education (CDOE)
Himachal Pradesh University
Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005

विषय सूची

क्रम	इकाई	विषय	पृ. सं.
1		विषय सूची	ii
2		प्राक्कथन	iii
3		पाठ्यक्रम	iv
4	इकाई - 1	मालकौंस राग का विलंबित ख्याल	1
5	इकाई - 2	मारू बिहाग राग का विलंबित ख्याल	17
6	इकाई - 3	वृंदावनी सारंग राग का विलंबित ख्याल	28
7	इकाई - 4	मालकौंस राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	40
8	इकाई - 5	मारू बिहाग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	54
9	इकाई - 6	वृंदावनी सारंग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत	65
10	इकाई - 7	मालकौंस राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)	79
11	इकाई - 8	मारू बिहाग राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)	94
12	इकाई - 9	वृंदावनी सारंग राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)	106
13	इकाई - 10	मालकौंस राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	121
14	इकाई - 11	मारू बिहाग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	135
15	इकाई - 12	वृंदावनी सारंग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत	146
16	इकाई - 13	ताल • चौताल • धमार ताल • रूपक ताल • झप ताल	160
17		महत्वपूर्ण प्रश्न	177

प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA202PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में गायन के संदर्भ में मालकौंस राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में गायन के संदर्भ में मारू बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में गायन के संदर्भ में वृंदावनी सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में वादन के संदर्भ में मालकौंस राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में वादन के संदर्भ में मारू बिहाग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में वादन के संदर्भ में वृंदावनी सारंग राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में गायन के संदर्भ में मालकौंस राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में गायन के संदर्भ में मारू बिहाग राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में गायन के संदर्भ में वृंदावनी सारंग राग का परिचय, आलाप, छोटा त ख़्याल, तानें आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में वादन के संदर्भ में मालकौंस राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में वादन के संदर्भ में मारू बिहाग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में वादन के संदर्भ में वृंदावनी सारंग राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में ताल पक्ष से चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।

प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

CODE MUSA202PR

Hindustani Music (Vocal/Inst.)

Paper-III Practical (Unit-II)

Title - Stage Performance

Max Marks 50 (35+15 Assesment) **Credit 3**

Raga

- Malkauns
- Maru-Bihag
- Vrindavani Sarnag

- One Vilambit Khyal/Maseetkhani Gat in any of the prescribed Ragas.
- Madhya Laya Khyal/Razakhani Gat in all the Rãgas.
- Ability to recite the Thekas, Dugun & Chaugun of Chautala, Dhamar, Roopak, Jhaptal
- Playing of Tanpura is compulsory.
- Basic knowledge of playing Harmonium with Alankars or Bhajan

इकाई-1
मालकौंस राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
1.1	भूमिका
1.2	उद्देश्य तथा परिणाम
1.3	राग मालकौंस
1.3.1	मालकौंस राग का परिचय
1.3.2	मालकौंस राग का आलाप
1.3.3	मालकौंस राग का विलंबित ख्याल 1
1.3.4	मालकौंस राग का विलंबित ख्याल 2
1.3.5	मालकौंस राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
1.4	सारांश
1.5	शब्दावली
1.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.7	संदर्भ
1.8	अनुशंसित पठन
1.9	पाठगत प्रश्न

1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मालकौंस का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मालकौंस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मालकौंस का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मालकौंस राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मालकौंस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

1.3 राग मालकौंस

1.3.1 मालकौंस राग का परिचय

राग - मालकौंस

थाट – भैरवी

जाति – औडव-औडव

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

वर्जित स्वर – ऋषभ तथा पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम

समय – रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – चंद्रकौंस

आरोह:- सा ग म ध नी सां

अवरोह:- सां नी ध, म ग म, ग सा

पकड़:- ध़ ऩी सा म, ग म ग सा

मालकौंस राग, भैरवी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति औडव-औडव है। मालकौंस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षडज है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्जित होते हैं। इस राग का गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज तथा मध्यम पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। यह एक प्रचीन राग है। राग में मध्यम स्वर पर न्यास अधिक किया जाता है (ध़ ऩी सा म, ग म ग सा)। मालकौंस राग को मध्य तथा मंद्र सप्तक में अधिक बजाया जाता है। यह गंभीर प्रकृति का राग है। राग रागिनी वर्गीकरण के अनुसार मालकौंस राग मुख्य छह पुरुष रागों के अंतर्गत आता है। समय के अनुसार इस राग को अलग-अलग नामों से जाना गया जैसे कई जगह इसे मालव कौशिक, मालकोश, मंगल कौशिक, मालकंस आदि संज्ञा दी गई। यह कौंस अंग का प्रमुख राग है।

वर्तमान समय में कौंस अंग के रागों को प्रमुखता के साथ गाया बजाया जाता है। कौंस अंग के रागों में मुख्यतः चंद्रकौंस, मधुकौंस, जोगकौंस, कौंसी कान्हड़ा आदि प्रमुख है। कौंस अंग की विशेषता में ग सा तथा ग म ग सा स्वरों का प्रयोग प्रमुख है। ध ग स्वरों की संगति कौंस अंग की मुख्य विशेषता है। इसका समप्रकृतिक राग चंद्रकौंस है। मालकौंस में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा चंद्रकौंस में शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (मालकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा, चंद्रकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा)। मालकौंस में निषाद पर न्यास नहीं होता है तथा चंद्रकौंस में निषाद पर न्यास किया जाता है। (मालकौंस: ध़ ऩी ध़ सा ग म, ग सा, चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी ऩी सा)। मालकौंस राग में सा से म पर सीधे आते हैं जबकि चंद्रकौंस राग में में सा से म पर सीधे नहीं आते हैं (मालकौंस: ध़ ऩी सा म, म ग सा, , चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी, ऩी सा।

1.3.2 मालकौंस राग का आलाप

- सा - ध़ ऩी सा - ऩी सा म - ग सा - सा - - ऩी ध़ - -

  म़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा -, ऩी सा ग - सा - - ऩी सा -।

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ म़, म़ ग़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा, ग म ग सा सा - ऩी सा।

- ऩी सा म - ग म - म -, ग म ध म, ग म ध म ग सा -

  सा - ऩी ध़ सा, ध़ ऩी ऩी सा - सा।

- ऩी सा ग ग म - म ध म - म ध नी - ध म -, म ध नी नी - -

  ऩी सा ग म ध नी नी सं - सां - सां।

- नी सां नी ध म ग म ध नी नी सां - गं सां नी नी सां -,

  नी सां गं गं मं - मं - गं मं धं धं मं, गं मं गं सां

  सां नी सां - सां गं मं गं सां सां -।

- सां सां नी, ध ध म ग म ध म - म ग म ग सा - सा - ऩी ध़ सा - ध़ ऩी ऩी सा।

- ऩी सा ग म ध नी नी सां नी ध नी ध म, ग म ध नी ध म - ग म ग सा ध़ ऩी सा -।

1.3.3 मालकौंस राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल 1

राग: मालकौंस **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थायी

जिनके मन राम विराजे
वाके सफल होत सब काज

अंतरा

जो मांगूं सो देत पदारथ
एसो गरीब नवाज

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
								ग	म	गसा	ऩीसागसा
								जि	न	केऽ	मऽनऽ
ध़	ऩी	सा	ऩीसा	ग	म	ग	सा				
रा	ऽ	म	ऽऽ	वि	रा	जे	ऽ				
								साग	गम	मध	नी
								वाऽ	केऽ	सफ	ल
धम	म	ग	म	गम	धम	ग	सा				
होऽ	त	स	ब	काऽ	ऽऽ	ज	ऽ				
								ग	म	गसा	ऩीसागसा
								जि	न	केऽ	मऽनऽ
ध़	ऩी	सा	ऩीसा	ग	म	ग	सा				
रा	ऽ	म	ऽऽ	वि	रा	जे	ऽ				
								साग	गम	मध	नी
								वाऽ	केऽ	सफ	ल
धम	म	ग	म	गम	धम	ग	सा				
होऽ	त	स	ब	काऽ	ऽऽ	ज	ऽ				

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
								ग	म	ध	नी
								जो	ऽ	मां	ऽ
सां	नीसां	धनी	सांगं	गं	सां	धनी	धम				
गूं	सोऽ	देऽ	तप	दाऽ	ऽ	रऽ	थऽ				
								ध	नी	सां	नीसां
								ए	ऽ	सो	ऽऽ
सां	नी	ध	मम	गम	धम	गम	गसा				
ग	री	ऽ	बन	वाऽ	ऽऽ	ऽऽ	जऽ				
								ग	म	ध	नी
								जो	ऽ	मां	ऽ
सां	नीसां	धनी	सांगं	गं	सां	धनी	धम				
गूं	सोऽ	देऽ	तप	दाऽ	ऽ	रऽ	थऽ				
								ध	नी	सां	नीसां
								ए	ऽ	सो	ऽऽ
सां	नी	ध	मम	गम	धम	गम	गसा				
ग	री	ऽ	बन	वाऽ	ऽऽ	ऽऽ	जऽ				
स्थाई											
								ग	म	गसा	ऩीसागसा
								जि	न	केऽ	मऽनऽ
ध़	ऩी	सा	ऩीसा	ग	म	ग	सा				
रा	ऽ	म	ऽऽ	वि	रा	जे	ऽ				

1.3.4 मालकौंस राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल 2

राग: मालकौंस **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थायी

पीर न जानी रे, बलमा

देखी तेहारी अनोखी रीत।

अंतरा

ऐसो निरमोही भईल बलमा,

अजहू न आए, ये कहाँ की रीत।

x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थायी											
								सां	नीध	मध	नीध
								पी	ऽऽ	ऽऽ	र न
म	म	ग	ग	म	म	ग	सा				
जा	ऽ	ऽ	ऽ	नी	ऽ	रे	ऽ				
								ग	गम	ग	सा
								ब	लऽ	मा	ऽ
ऩी	सा	-	ऩी	सा	सा	ऩी	ध				
दे	ऽ	ऽ	खी	ऽ	ते	हा	ऽ				
								ऩी	सा	सा	ग
								ऽ	ऽ	री	अ
म	ध	नी	नी	ध	नी	ध	म				
नो	ऽ	खी	ऽ	री	ऽ	त	ऽ				

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
अंतरा											
								ग	म	ध	नी
								ऐ	सो	नि	र
सां	-	सां	-	सां	नीध	म	ध				
मो	ऽ	ही	ऽ	भ	ईऽ	ल	ऽ				
								नी	ध	म	-
								ब	ल	मा	ऽ
ग	म	ध	नी	सां	-	मं	-				
अ	ज	हू	न	आ	ऽ	ए	ऽ				
								गं	मं	गं	सां
								ये	ऽ	क	हाँ
सां	-	नीध	मध	नी	ध	म	-				
की	ऽ	ऽऽ	ऽऽ	री	ऽ	त	ऽ				

1.3.5 मालकौंस की तानें

- सा ऩी ध़ ऩी   सा ग ग सा   ऩी सा ध़ ऩी   सा ग म ग
  सा ग ऩी सा   ध़ ऩी सा ग   म ध म ग   ऩी ऩी सा सा
- सा ग म ग   सा ग ऩी सा   ध़ ऩी सा ग   म म ग म
  ध म ग म   ग सा ऩी सा   ध़ ऩी सा ग   ऩी ऩी सा सा
- सा म ग म   ऩी सा ग म   ध म ग म   सा ग ऩी सा
  नी ध म ग   ध म ग म   ग सा ऩी सा   ध़ ऩी ग सा

• ध़ ऩी सा ग	ऩी सा ध़ ऩी	ध़ सा ऩी ग	सा म ग म
ध म ग म	नी ध म ग	म ग सा ग	ऩी ऩी सा -
• ऩी सा ग म	ध म ग म	सा ग ऩी सा	ध़ ऩी सा म
ग म नी ध	म ग सा ग	ऩी सा ध़ ऩी	सा ग सा -
• म म ग म	ग सा ऩी सा	ध ध म ध	म ग सा ग
ऩी सा नी नी	ध म ग म	ग सा ऩी सा	ध़ ऩी सा -
• सां सां नी सां	नी नी ध म	ग म ध नी	सां गं नी सां
ध नी ध म	ग म ध म	ग म ग सा	ध़ ऩी सा -
• ग ग सा ऩी	सा ग ग सा	ऩी सा ध़ ऩी	सा म म ग
म ग सा ग	ऩी सा ध़ ऩी	सा ग म ग	म ग सा -
• सा ग म ध	म ग सा ग	म ध नी ध	म ग सा ग
म ध नी सां	नी ध म ग	म ध नी सां	नी गं गं सां
• ध़ ऩी सा ग	सा ऩी सा सा	सा ग म ग	सा ऩी सा सा
• सा ग म ध	म ग म ध	म ग म ग	सा ऩी सा सा
• ग म ध नी	सां नी ध नी	ध म ग म	ग म ग सा
• ग म ध नी	ध म ध नी	सां नी ध नी	सां गं सां नी
गं मं गं सां	नी सां ध नी	म ध ग म	ग सा ऩी सा

- सां सां नी सां | गं गं सां सां | नी ध नी सां | गं सां नी सां

  सां नी ध नी | ध म ग म | नी सां ध नी | ध म ग म

- सा ऩी ध़ ऩी | सा ऩी सा सा | ध़ ऩी सा ग | सा ऩी सा सा

  ऩी सा ग म | ग सा ऩी सा | ध़ ऩी सा ग | म ध म ग

  म ग सा ऩी | ऩी सा सा सा | सा ग म ध | म ग सा ऩी

  म ग म ध | म ग सा ऩी | ऩी सा सा ग | ग सा ऩी सा

  सा ग म ध | म ग म ध | म ग म ध | नी ध म ग

  सा ऩी सा ग | ऩी सा ग म | सा ग म ध | ग म ध नी

  म ध नी सां | नी ध म ध | म ग म ध | म ग सा ऩी

  ध़ ऩी सा ग | म ग ध ऩी | सा सा ऩी सा | ग म ग सा

  ग म ध म | म ध नी ध | ध नी सां नी | सां सां नी सां

  सां नी सां गं | सा नी ध नी | सां गं सां नी | ध नी सां नी

  सां गं मं गं | सां नी ध नी | सां सां नी सां | गं गं सां सां

  गं मं गं सां | नी सां ध नी | म ध ग म | ग सा ऩी सा

- सां नी ऽ नी | ध ऽ ध म | ऽ म ग ऽ | सा ऽ ऩी सा

  सा ऽ ऩी ऽ | सा ऽ ऽ ऽ | ग ऽ ग ऽ

- सां ऽ सां नी | ध म ग नी | ऽ नी ध म | ग म ध ऽ | ध म ग म

  ग म ऽ म | ग सा ऩी सा | सा ऽ ऩी ऽ | सा ऩी सा सा | ऩी सा सा ऩी

• सा ग ग म	म ध ध नी	नी सां नी गं	सां नी सां ऽ
नी सांसां नीनी गंगं	सांऽ सांनी ऽनी सांऽ	ध नीनी धध मम	गऽ मग ऽग साऽ
ऩी सा ऽ ऽ	ऩी सा ऽ ऽ	ऩी सा ऽ ऽ	

• ऩी सा ग ग	सा ग म म	ग म ध ध	म ग म ध
सा ग म म	ग म ध ध	म ध नी नी	ध म ध नी
ग म ध ध	म ध नी नी	ध नी सां सां	नी ध नी सां
म ध नी नी	ध नी सां सां	नी सां गं गं	सां नी सां गं
ध नी सां सां	नी सां गं गं	सां गं मं मं	मं गं सां नी
सां सां नी सां	ध नी सां सां	म ध नी नी	ग म ध म
ग म ग सा	सां सां नी सां	ध नी सां सां	म ध नी नी
ग म ध म	ग म ग सा	सां सां नी सां	ध नी सां सां
म ध नी नी	ग म ध म	ग म ग	

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 मालकौंस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

1.2 मालकौंस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

1.3 मालकौंस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

1.4 मालकौंस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

1.5 मालकौंस राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

1.6 मालकौंस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

1.7 मालकौंस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ध नी

घ) ध नि सां नी ध म ग

1.8 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

1.9 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

1.10 मालकौंस राग, चंद्रकौंस तथा बिलावल रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

1.4 सारांश

मालकौंस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मालकौंस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

1.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

1.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 उत्तर: ग)

1.2 उत्तर: घ)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: क)

1.5 उत्तर: ग)

1.6 उत्तर: ग)

1.7 उत्तर: घ)

1.8 उत्तर: ग)

1.9 उत्तर: ख)

1.10 उत्तर: ख)

1.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

1.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

1.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मालकौंस का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मालकौंस का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मालकौंस के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मालकौंस में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-2
मारू बिहाग राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
2.1	भूमिका
2.2	उद्देश्य तथा परिणाम
2.3	राग मारू बिहाग
2.3.1	मारू बिहाग राग का परिचय
2.3.2	मारू बिहाग राग का आलाप
2.3.3	मारू बिहाग राग का विलंबित ख्याल
2.3.4	मारू बिहाग राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
2.4	सारांश
2.5	शब्दावली
2.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
2.7	संदर्भ
2.8	अनुशंसित पठन
2.9	पाठगत प्रश्न

2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मारू बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मारू बिहाग का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मारू बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मारू बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

2.3 राग मारू बिहाग

2.3.1 मारू बिहाग राग का परिचय

राग - मारू बिहाग

थाट – कल्याण

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

न्यास के स्वर - गंधार, पंचम, निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह – ऩी सा ग, मं' प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं' ग मं' ग रे सा

पकड़ - ध प मं' ग मं' ग, रे सा

राग मारू बिहाग, कल्याण थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति औडव-संपूर्ण है। मारू बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। मारू बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग मं। तीव्र मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह में किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, मं ग मं ग या मं प मं ग। इसके शुद्ध मध्यम का आरोह में केवल षड्ज के साथ किया जाता है जैसे - ऩी सा म ग मं प। मारू बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे - सां नि, [ध]प, मं प मं ग मं ग [रे]सा। अवरोह में मं ग मं ग स्वरों की संगति प्रमुख रूप से लगती है।

2.3.2 मारू बिहाग राग का आलाप

- सा ऩी ऩी सा, ऩी सा रे सा ऩी ऩी सा
- सा ऩि ध़ प़, प़ ऩी नी़ सा, सा ऩि सा ग, रे सा,
- सा म, ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा सा
- ऩी सा ग ग मं मं प, प, प, मं ग मं ग रे सा
- सा म, ग मं मं प, मं प ध प, प, मं प मं ग मं प, प
- मं प ध प, नी ध प, प नि नी सां, सां, रें सां
- नी सां रें सां, नी ध प नी नी सां गं रें सां, सां ग मं मं पं मं गं मं गं रें सां, सां,
- सां नी ध प, मं प मं ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा, सा

2.3.3 मारू बिहाग राग   विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: मारू बिहाग   **ताल: एकताल**   **लय: विलम्बित लय**

स्थाई

रसिया हो ना जाओ
ना जाओ वाहू के देस |

अंतरा

मन चिंता मत बावरी
लेऊ जोगनिया को भेस ||

x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
स्थाई											
										ऩीसामम	गसागम'प-म'
										रसिया-	-----हो
पम'प-	पप	म'म'	प	म'गम'पनी	धप	धम'प-	म'पम'ग	म'ग	रेसा-		
ना---	जा	ओ-	ना	जा-ओ-	वा--	हू	के--	दे-	स-		
अंतरा											
										म'प	नीसां
										मन	चि-
सां	[नी]सां	रेंसां	[नी]सां	नीसांरें	गं	रेंसां	सां	नीसांनी	धप		
ता	-	मत	-	बा-	व	री-	सी	भ----	-ई		
										म'प	नीसां
										ले-	ऊ-
[नी]सां	गंम'	गंरेंसां	सां	नीसांरेंसां	नीधप	धम'प	[म']पग	म'ग	रेसा		
जो	ग-	नि-	या	को----	--	भे---	--	--	स-		

2.3.4 मारू बिहाग की तानें

- ऩीसाग सागम॑ गम॑प म॑पनी
  पनीसां नीसारें रेंसांनी सांनीध
  नीधप पम॑ग म॑गरे गसाऩी
- ऩीसागम॑ सागम॑प गम॑पनी म॑पनीसां
  पनीसारें रेंसांनीध सांनीधप नीधपम॑
  धपम॑ग पम॑गरे म॑गरेसा
- ऩीसारेरे सांनीधप म॑पम॑प धपधप
  ऩीसागम॑ प--- ऩीसागम॑ प--- ऩीसगम॑
- साऩीधप म॑पम॑ग म॑गरेस ऩीसागम॑
  नीनीधप म॑पधप म॑पम॑ग म॑गरेसा
- ऩीसासागम॑ पम॑म॑गम॑ गम॑म॑पनी सांनीनीधप
  म॑पपनीसां सांनीनीधप ऩीसासागम॑ प---
  ऩीसासागम॑ प---- ऩीससागम॑प
- ऩीऩीऩी सासासा गगग म॑म॑म॑ पपप नीनीनी सांसांसां
  नीनीनी धधध पपप म॑म॑म॑ गगग रेरेरे सासासा
- सासासा म॑म॑म॑ गगग पपप म॑म॑म॑ नीनीनी पपप

सांसांसां सांसांसां नीनीनी पपप म॑म॑म॑ नीनीनी

पपप म॑म॑म॑ गगग

- ऩीसाऩीसाग सागसागम॑ गम॑गप म॑पम॑पनी पनीपनीसां

सांनीसांनीप नीपनीपम॑ पम॑पम॑ग म॑गम॑गरे गरेगरेसा ऩीसागम॑पनी

सां---- ऩीसागम॑पनी सां---- ऩीसगम॑पनी सां----

- ऩीसासाग ऩीसासाग ऩीसा ऩीसासागम॑

पम॑गम॑ गम॑म॑प गम॑म॑प गम॑

गम॑म॑पनी सांनीनीधप पनीनीसां पनीनीसां

पनी पनीनीसारें रेंसांसांनीसां गरेंरेंसारें

रेंसांसांनीध सांनीनीधनी म॑गगरेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 मारू बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) ध

2.2 मारू बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

2.3 मारू बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम प्रहर

घ) दोपहर

2.4 मारू बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

2.5 मारू बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) प

ग) नी

घ) सा

2.6 मारू बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) भैरव

ख) कल्याण

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

2.7 मारू बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि सां ध प, मं॑ ग

ख) म॑ ध सां नि ध प, म॑

ग) ध प म॑ ग म॑ ग रे

घ) ध नि सां नी ध म ग

2.8 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

2.9 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

2.10 मारू बिहाग राग, बिहाग तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

2.4 सारांश

मारू बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मारू बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

2.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

2.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ख)

2.3 उत्तर: ग)

2.4 उत्तर: घ)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: ख)

2.7 उत्तर: ग)

2.8 उत्तर: घ)

2.9 उत्तर: क)

2.10 उत्तर: ख)

2.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

2.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

2.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मारू बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मारू बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मारू बिहाग के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मारू बिहाग में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-3
वृंदावनी सारंग राग का विलंबित ख्याल
(गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
3.1	भूमिका
3.2	उद्देश्य तथा परिणाम
3.3	राग वृंदावनी सारंग
3.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय
3.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप
3.3.3	वृंदावनी सारंग राग का विलंबित ख्याल
3.3.4	वृंदावनी सारंग राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
3.4	सारांश
3.5	शब्दावली
3.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
3.7	संदर्भ
3.8	अनुशंसित पठन
3.9	पाठगत प्रश्न

3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

3.3 राग वृंदावनी सारंग

3.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय

राग - वृंदावनी सारंग

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - ऩि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां नि प, म रे, सां

पकड़ - रे म प नि प, म रे, प म रे, ऩि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है। ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृंदावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, ऩि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विषेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, मरे, प म रे, रे म रे आदि। राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद (नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

वृंदावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृंदावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)। मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृंदावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृंदावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प़ ऩी सा रे, ऩी सा रे,)। मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प़नीप़। वृंदावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृंदावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मल्हाहार अंग का प्रयोग अधिक होता है।

3.3.2 वृंदावनी सारंग राग का आलाप

1 सा, सा रे सा, सा, ऩी सा ऩी ऩी सा, रे ऽ सा सा

2 ऩी ऩी सा ऽ सा ऩी ऽ सा रे ऽ रे म रे ऽ ऩी सा रे ऽ साऽ

3 सा ऩी ऩी ऽ प़ ऽ प़ ऽ ऽ म़ प़ ऽ प़ प़ ऩी प ऽ

म़ प़ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

4 ऩी सा मरे म म प ऽ ऽ प म रे ऽ म रे ऽ रे

म प ऽ ऽ म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

5 मरे म म प ऽ ऽ प ऽ म प नी प ऽ प ऽ म म प ऽ

प नी प ऽ नी प नी प म रे ऽ रे म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

6 मरे म प नी नी ऽ सां ऽ सां ऽ नी सां रें ऽ रें मं

मं रें ऽ रें सां

7 नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रेंऽ मं रें नी नी सां ऽ सां

8 सां नी प ऽ नी सां नी प ऽ म प ऽ म रे ऽ प

म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

3.3.3 वृंदावनी सारंग राग विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल

राग: वृंदावनी सारंग **ताल: एकताल** **लय: विलम्बित लय**

स्थई

काहे हो तुम कीन्हीं हम संग इतनी निठुराई

अंतरा

औरन के संग रहत रामरंग मेरो सुध दीन्हीं बिसराई

x		0		2		0		3		4	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
										नीमप	रेसा
										काऽऽ	हेऽ
रे	-	सा	ऩीसा	रे	मप	रे	-	म	प		
हो	ऽ	तु	मऽ	की	ऽऽ	न्हीं	ऽ	ह	म		
										नीप	नी
										सं	ग
सां	-सां	नी	प	रे	म	पम	रे	सा-	-सा		
इ	ऽत	नी	ऽ	नि	ठु	ऽऽ	रा	ई	ऽऽ		
अंतरा											
										मप	नीपनी
										औ	रऽन
सां	सांसां	नीऽ	सां	रें	मरें	सां	नीसां	नी	प		
के	संग	र	ह	त	रा	म	रं	ग	ऽ		
										मरे	पम
										मेऽ	ऽऽ
प	-	मप	नीसां	नी	प	प	म	रे	सा		
रो	ऽ	सुध	दीऽ	न्हीं	ऽ	बिस	रा	ऽ	ई		

3.3.4 वृंदावनी सारंग की तानें

- ऩीसारे सारेम मपनी पनीसां

  निसारें सारेंमं मरेंसां रेंसांनीं

  सांनिप निपम पमरे मरेसा रेसाऩी

- ऩीसासारेसा ऩीसासारेम रेसासाऩीसा ऩीसासारेम

  पमरेमरे सासाऩीसा ऩीसारेमप निसांनिनिप

  मरेमम रेसाऩीसा

- रेमपनी मपनीसां पनीसारें निसारेंमं सारेंमंपं पंमंरेंसां

  मंरेंसांनी रेंसांनिप सांनीपम निपमरे ऩीसारेम प---

  ऩीसारेम प--- ऩीसारेम प---

- सारेमम रेमपप मपनीनी पनीसांसां नीसारेंरें सारेंमंमं

  मंमंरेंसां रेंरेंसांनी सांसांनप निनिपम पपमरे ममरेसा

- रेमरेमप मपमपनी पनीपनीसां निसांनिसारें

  सारेंसरेंगं मंरेंमंरेंसां रेंसारेंसांनी सांनिसांनिप

  निपनिपम पमपमरे रेमरेसा ऩीसा

  रेमप- रेमरेसा ऩीसा रेमप-

  रेमरेसा ऩीसा रेमप-

सासासा रेंरेंरें ममम पपप नीनीनी सांसांसां रेंरेंरें

रेंरेंरें सांसांसां नीनीनी पपप ममम रेरेरे सासासा

- ऩीसाऩीसा रेसाऩीसा रेमरेम पमपम

  मपमप निसांनिसां सांनीनीपनी नीपपमप

  मरेरेऩीसा सांनीनीपनी निपपमप मरेरेऩीसा

  सांनीनीपन निपपमप मरेरेऩीसा

- मंमंमं रेंरेंरें सांसांसां सांसांसां

  नीनीनी पपप ममम पपप

  ममम रेरेरे ममम रेरेरे सासासा

- ऩीसासारे ऩीसासारे ऩीसा ऩीसासारेम पमरेम मपपम

  मपपम मप मपपनीसां रेंसांसांनिसां पनीनीसां पनीनीसां

  पनी पनीसारेंसां नीनीपनी सांनीनीपनी नीपपमप मरेसाऩी-

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

3.2 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

3.3 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

3.4 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

3.5 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

3.6 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) काफी

घ) तोड़ी

3.7 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) <u>नि</u> ध प, म रे सा

ख) सां नि प, म

ग) नि ध प म नी

घ) सां नी प म

3.8 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

3.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल तीन ताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

3.10 वृंदावनी सारंग राग, सारंग तथा वृंदा रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

3.4 सारांश

वृंदावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। वृंदावनी सारंग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल, विलंबित लय में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

3.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप से राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

3.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ग)

3.3 उत्तर: ग)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: क)

3.6 उत्तर: ग)

3.7 उत्तर: घ)

3.8 उत्तर: ग)

3.9 उत्तर: ख)

3.10 उत्तर: ख)

3.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

3.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग के विलंबित ख्याल/ बड़ा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-4
मालकौंस राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
4.1	भूमिका
4.2	उद्देश्य तथा परिणाम
4.3	राग मालकौंस
4.3.1	मालकौंस राग का परिचय
4.3.2	मालकौंस राग का आलाप
4.3.3	मालकौंस राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत 1
4.3.4	मालकौंस राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत 2
4.3.5	मालकौंस राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
4.4	सारांश
4.5	शब्दावली
4.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
4.7	संदर्भ
4.8	अनुशंसित पठन
4.9	पाठगत प्रश्न

4.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा गायन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मालकौंस का परिचय, आलाप, की विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मालकौंस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मालकौंस का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मालकौंस राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मालकौंस राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मालकौंस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

4.3 राग मालकौंस

4.3.1 मालकौंस राग का परिचय

राग - मालकौंस

थाट – भैरवी

जाति – औडव-औडव

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

वर्जित स्वर – ऋषभ तथा पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग॒ ध॒ नि॒), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम

समय – रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – चंद्रकौंस

आरोह:- सा ग॒ म ध॒ नि॒ सां

अवरोह:- सां नी ध, म ग म, ग सा

पकड़:- ध नी सा म, ग म ग सा

मालकौंस राग, भैरवी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति औडव-औडव है। मालकौंस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षडज है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्जित होते हैं। इस राग का वादन समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज तथा मध्यम पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। यह एक प्रचीन राग है। राग में मध्यम स्वर पर न्यास अधिक किया जाता है (ध नी सा म, ग म ग सा)। मालकौंस राग को मध्य तथा मंद्र सप्तक में अधिक बजाया जाता है। यह गंभीर प्रकृति का राग है। राग रागिनी वर्गीकरण के अनुसार मालकौंस राग मुख्य छह पुरुष रागों के अंतर्गत आता है। समय के अनुसार इस राग को अलग-अलग नामों से जाना गया जैसे कई जगह इसे मालव कौशिक, मालकोश, मंगल कौशिक, मालकंस आदि संज्ञा दी गई। यह कौंस अंग का प्रमुख राग है।

वर्तमान समय में कौंस अंग के रागों को प्रमुखता के साथ गाया बजाया जाता है। कौंस अंग के रागों में मुख्यतः चंद्रकौंस, मधुकौंस, जोगकौंस, कौंसी कान्हड़ा आदि प्रमुख है। कौंस अंग की विशेषता में ग सा तथा ग म ग सा स्वरों का प्रयोग प्रमुख है। ध ग स्वरों की संगति कौंस अंग की मुख्य विशेषता है। इसका समप्रकृतिक राग चंद्रकौंस है। मालकौंस में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा चंद्रकौंस में शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (मालकौंस: ध नी सा ग म ग सा, चंद्रकौंस: ध नी सा ग म ग सा)।

मालकौंस में निषाद पर न्यास नहीं होता है तथा चंद्रकौंस में निषाद पर न्यास किया जाता है। (मालकौंस: ध नी ध सा ग म, ग सा, चंद्रकौंस: सा ग म ग सा नी नी सा)। मालकौंस राग में सा से म पर सीधे आते हैं जबकि चंद्रकौंस राग में में सा से म पर सीधे नहीं आते हैं (मालकौंस: ध नी सा म, म ग सा, , चंद्रकौंस: सा ग म ग सा नी, नी सा।

4.3.2 मालकौंस राग का आलाप

- सा - ध़ ऩी सा - ऩी सा म - ग सा - सा - - ऩी ध़ - -

  म़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा -, ऩी सा ग - सा - - ऩी सा -।

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ म़, म़ ग़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा, ग म ग सा सा - ऩी सा।

- ऩी सा म - ग म - म -, ग म ध म, ग म ध म ग सा -

  सा - ऩी ध़ सा, ध़ ऩी ऩी सा - सा।

- ऩी सा ग ग म - म ध म - म ध नी - ध म -, म ध नी नी - -

  ऩी सा ग म ध नी नी सं - सां - सां।

- नी सां नी ध म ग म ध नी नी सां - गं सां नी नी सां -,

  नी सां गं गं मं - मं - गं मं धं धं मं, गं मं गं सां सां नी

  सां - सां गं मं गं सां सां -।

- सां सां नी, ध ध म ग म ध म - म ग म ग सा - सा - ऩी ध़ सा - ध़ ऩी ऩी सा।

- ऩी सा ग म ध नी नी सां नी ध नी ध म,

  ग म ध नी ध म - ग म ग सा ध़ ऩी सा -।

4.3.3 मालकौंस राग विलंबित गत/मसीतखानी गत 1

राग: मालकौंस **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											गम	गसा	ऽऩीसा	धऽ	ऽऩीऩी
											दिर	दिर	ऽदिर	दाऽ	ऽदिर
सा	सा	सा	ऩीसा	ग	मम	ध	ऽधनी	धम	गम	गसा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	ऽदिर	दिर	दिर	दिर					
अन्तरा															
											मम	गऽ	मम	ध	नी
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	नीनी	सां	नीनी	ध	मम	ध	नीनी	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	दा	दिर	रा					
											गंमं	गं	सांसां	नी	सां
											दिर	दा	दिर	दा	रा
नी	ध	म	मम	ग	मम	ध	म	गम	ग	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					

4.3.4 मालकौंस राग विलंबित गत/मसीतखानी गत 2

राग: मालकौंस **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											निनि	सा	गग	म	निध
											दिर	दा	दिर	दा	दिरा
सां	नि	नि	धम	ग	मम	नि	ध	म	ग	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	ग	मम	ध	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सांसां	नि	सांसां	गं	सां	नि	ध	म					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											सांसां	नि	धध	म	ध
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	निनि	ध	म	ग	मम	ध	ध	म	ग	सा					
दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

4.3.5 मालकौंस राग के तोड़े

- सा ऩी ध़ ऩी　　सा ग ग सा　　ऩी सा ध़ ऩी　　सा ग म ग
  सा ग ऩी सा　　ध़ ऩी सा ग　　म ध म ग　　ऩी ऩी सा सा
- सा ग म ग　　सा ग ऩी सा　　ध़ ऩी सा ग　　म म ग म
  ध म ग म　　ग सा ऩी सा　　ध़ ऩी सा ग　　ऩी ऩी सा सा
- सा म ग म　　ऩी सा ग म　　ध म ग म　　सा ग ऩी सा
  नी ध म ग　　ध म ग म　　ग सा ऩी सा　　ध़ ऩी ग सा
- ध़ ऩी सा ग　　ऩी सा ध़ ऩी　　ध़ सा ऩी ग　　सा म ग म
  ध म ग म　　नी ध म ग　　म ग सा ग　　ऩी ऩी सा -
- ऩी सा ग म　　ध म ग म　　सा ग ऩी सा　　ध़ ऩी सा म
  ग म नी ध　　म ग सा ग　　ऩी सा ध़ ऩी　　सा ग सा -
- म म ग म　　ग सा ऩी सा　　ध ध म ध　　म ग सा ग
  ऩी सा नी नी　　ध म ग म　　ग सा ऩी सा　　ध़ ऩी सा -
- सां सां नी सां　　नी नी ध म　　ग म ध नी　　सां गं नी सां
  ध नी ध म　　ग म ध म　　ग म ग सा　　ध़ ऩी सा -
- ग ग सा ऩी　　सा ग ग सा　　ऩी सा ध़ ऩी　　सा म म ग
  म ग सा ग　　ऩी सा ध़ ऩी　　सा ग म ग　　म ग सा -

•	सा ग म ध	म ग सा ग	म ध नी ध	म ग सा ग
	म ध नी सां	नी ध म ग	म ध नी सां	नी गं गं सां
•	ध़ ऩी सा ग	सा ऩी सा सा	सा ग म ग	सा ऩी सा सा
•	सा ग म ध	म ग म ध	म ग म ग	सा ऩी सा सा
•	ग म ध नी	सां नी ध नी	ध म ग म	ग म ग सा
•	ग म ध नी	ध म ध नी	सां नी ध नी	सां गं सां नी
	गं मं गं सां	नी सां ध नी	म ध ग म	ग सा ऩी सा
•	सां सां नी सां	गं गं सां सां	नी ध नी सां	गं सां नी सां
	सां नी ध नी	ध म ग म	नी सां ध नी	ध म ग म
•	सा ऩी ध़ ऩी	सा ऩी सा सा	ध़ ऩी सा ग	सा ऩी सा सा
	ऩी सा ग म	ग सा ऩी सा	ध़ ऩी सा ग	म ध म ग
	म ग सा ऩी	ऩी सा सा सा	सा ग म ध	म ग सा ऩी
	म ग म ध	म ग सा ऩी	ऩी सा सा ग	ग सा ऩी सा
	सा ग म ध	म ग म ध	म ग म ध	नी ध म ग
	सा ऩी सा ग	ऩी सा ग म	सा ग म ध	ग म ध नी
	म ध नी सां	नी ध म ध	म ग म ध	म ग सा ऩी
	ध़ ऩी सा ग	म ग ध ऩी	सा सा ऩी सा	ग म ग सा

ग म ध म   म ध नी ध   ध नी सां नी   सां सां नी सां

सां नी सां गं   सा नी ध नी   सां गं सां नी   ध नी सां नी

सां गं मं गं   सां नी ध नी   सां सां नी सां   गं गं सां सां

गं मं गं सां   नी सां ध नी   म ध ग म   ग सा ऩी सा

- सां नी ऽ नी   ध ऽ ध म   ऽ म ग ऽ   सा ऽ ऩी सा

  सा ऽ ऩी ऽ   सा ऽ ऽ ऽ   ग ऽ ग ऽ

  सां ऽ सां नी   ध म ग नी   ऽ नी ध म   ग म ध ऽ   ध म ग म

  ग म ऽ म   ग सा ऩी सा   सा ऽ ऩी ऽ   सा ऩी सा सा   ऩी सा सा ऩी

- सा ग ग म   म ध ध नी   नी सां नी गं   सां नी सां ऽ

  नी सांसां नीनी गंगं   सांऽ सांनी ऽनी सांऽ   ध नीनी धध मम   गऽ मग ऽग साऽ

  ऩी सा ऽ ऽ   ऩी सा ऽ ऽ   ऩी सा ऽ ऽ

- ऩी सा ग ग   सा ग म म   ग म ध ध   म ग म ध

  सा ग म म   ग म ध ध   म ध नी नी   ध म ध नी

  ग म ध ध   म ध नी नी   ध नी सां सां   नी ध नी सां

  म ध नी नी   ध नी सां सां   नी सां गं गं   सां नी सां गं

  ध नी सां सां   नी सां गं गं   सां गं मं मं   मं गं सां नी

  सां सां नी सां   ध नी सां सां   म ध नी नी   ग म ध म

  ग म ग सा   सां सां नी सां   ध नी सां सां   म ध नी नी

ग म ध म	ग म ग सा	सां सां नी सां	ध नी सां सां
म ध नी नी	ग म ध म	ग म ग सा	

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 मालकौंस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

4.2 मालकौंस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

4.3 मालकौंस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

4.4 मालकौंस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

4.5 मालकौंस राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

4.6 मालकौंस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

4.7 मालकौंस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ध नी

घ) ध नि सां नी ध म ग

4.8 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.9 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

4.10 मालकौंस राग, चंद्रकौंस तथा बिलावल रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

4.4 सारांश

मालकौंस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मालकौंस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

4.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को ‘लय’ कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

4.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: ग)

4.2 उत्तर: घ)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: क)

4.5 उत्तर: ग)

4.6 उत्तर: ग)

4.7 उत्तर: घ)

4.8 उत्तर: ग)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: ख)

4.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

4.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

4.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मालकौंस का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मालकौंस का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मालकौंस की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मालकौंस में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-5
मारू बिहाग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
5.1	भूमिका
5.2	उद्देश्य तथा परिणाम
5.3	राग मारू बिहाग
5.3.1	मारू बिहाग राग का परिचय
5.3.2	मारू बिहाग राग का आलाप
5.3.3	मारू बिहाग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
5.3.4	मारू बिहाग राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
5.4	सारांश
5.5	शब्दावली
5.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
5.7	संदर्भ
5.8	अनुशंसित पठन
5.9	पाठगत प्रश्न

5.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मारू बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मारू बिहाग का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मारू बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मारू बिहाग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मारू बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

5.3 राग मारू बिहाग

5.3.1 मारू बिहाग राग का परिचय

थाट – कल्याण

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

न्यास के स्वर - गंधार, पंचम, निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह – ऩी सा ग, मं प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं ग मं ग रे सा

पकड़ - ध प मं ग मं ग, रे सा

राग मारू बिहाग, कल्याण थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति औडव-संपूर्ण है। मारू बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। मारू बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग मं। तीव्र मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह में किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, मं ग मं ग या मं प मं ग। इसके शुद्ध मध्यम का आरोह में केवल षड्ज के साथ किया जाता है जैसे - ऩी सा म ग मं प। मारू बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे - सां नि, ध्प, मं प मं ग मं ग रेसा। अवरोह में मं ग मं ग स्वरों की संगति प्रमुख रूप से लगती है।

5.3.2 मारू बिहाग राग का आलाप

- सा ऩी ऩी सा, ऩी सा रे सा ऩी ऩी सा
- सा ऩि ध़ प़, प़ ऩी ऩी सा, सा ऩि सा ग, रे सा,
- सा म, ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा सा
- ऩी सा ग ग मं मं प, प, प, मं ग मं ग रे सा
- सा म, ग मं मं प, मं प ध प, प, मं प मं ग मं प, प
- मं प ध प, नी ध प, प नि नी सां, सां, रें सां
- नी सां रें सां, नी ध प नी नी सां गं रें सां, सां ग मं मं पं मं गं मं गं रें सां, सां,
- सां नी ध प, मं प मं ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा, सा,

5.3.3 मारू बिहाग राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: मारू बिहाग **ताल: तीन ताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											साम	ग	रेसा	ऩीसा	गम'
											दारा	दा	दारा	दारा	दारा
प	प	प	म'म'	प	नीध	प	म'ग	म'ग	रे	सा					
दा	दा	रा	दारा	दा	दारा	रा	दारा	दारा	दा	रा					
											ऩीऩी	सा	ऩी	ऩी	ध़
											दारा	दा	रा	दा	रा
प़	प़	प़	म़'म़'	प़	ऩी	ध़	प़	ऩीऩी	रे	सा					
दा	दा	रा	दारा	दा	रा	दा	रा	दारा	दा	रा					
अंतरा															
											म'म'	ग	म'म'	प	नीनी
											दारा	दा	दारा	रा	दारा
सां	सां	सां	सांसां	रें	सांसां	गं	रेंसां	नी	ध	प					
दा	दा	रा	दारा	दा	दारा	दा	दारा	दा	दा	रा					
											म'म'	प	नीनी	सां	मंमं
											दारा	दा	दारा	दा	दारा
गं	रेंरें	सां	नीध	प	म'	ग	म'	ग	रेरे	सा					
दा	दारा	दा	दारा	दा	रा	दा	रा	दा	दारा	दा					

5.3.4 मारू बिहाग राग के तोड़े

- ऩीसागमॅ सागमॅप गमॅपनी मॅपनीसां
  पनीसारें रेंसांनीध सांनीधप नीधपमॅ
  धपमॅग पमॅगरे मॅगरेसा
- ऩीसाग सागमॅ गमॅप मॅपनी
  पनीसां नीसारें रेंसांनी सांनीध
  नीधप पमॅग मॅगरे गसाऩी
- ऩीसारेरे सांनीधप मॅपमॅप धपधप
  ऩीसागमॅ प--- ऩीसागमॅ प--- ऩीसगमॅ
- साऩीधप मॅपमॅग मॅगरेस ऩीसागमॅ
  नीनीधप मॅपधप मॅपमॅग मॅगरेसा
- ऩीसासागमॅ पमॅमॅगमॅ गमॅमॅपनी सांनीनीधप
  मॅपपनीसां सांनीनीधप ऩीसासागमॅ प---
  ऩीसासागमॅ प---- ऩीससागमॅप
- ऩीऩीऩी सासासा गगग मॅमॅमॅ पपप नीनीनी सांसांसां
  नीनीनी धधध पपप मॅमॅमॅ गगग रेरेरे सासासा
- सासासा मॅमॅमॅ गगग पपप मॅमॅमॅ नीनीनी पपप

सांसांसां सांसांसां नीनीनी पपप मंमंमं नीनीनी

पपप मंमंमं गगग

- ऩीसाऩीसाग सागसागमं गमंगप मंपमंपनी पनीपनीसां

सांनीसांनीप नीपनीपमं पमंपमंग मंगमंगरे गरेगरेसा ऩीसागमंपनी

सां---- ऩीसागमंपनी सां---- ऩीसगमंपनी सां----

- ऩीसासाग ऩीसासाग ऩीसा ऩीसासागमं

पमंगमं गमंमंप गमंमंप गमं

गमंमंपनी सांनीनीधप पनीनीसां पनीनीसां

पनी पनीनीसारें रेंसांसांनीसां गंरेंरेंसारें

रेंसांसांनीध सांनीनीधनी मंगगरेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 मारू बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) ध

5.2 मारू बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

5.3 मारू बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम प्रहर

घ) दोपहर

5.4 मारू बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

5.5 मारू बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) प

ग) नी

घ) सा

5.6 मारू बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) भैरव

ख) कल्याण

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

5.7 मारू बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि सां ध प, म॑ ग

ख) म॑ ध सां नि ध प, म॑

ग) ध प म॑ ग म॑ ग रे

घ) ध नि सां नी ध म ग

5.8 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

5.9 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

5.10 मारू बिहाग राग, बिहाग तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

5.4 सारांश

मारू बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मारू बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

5.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।

- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

5.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ख)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: घ)

5.5 उत्तर: क)

5.6 उत्तर: ख)

5.7 उत्तर: ग)

5.8 उत्तर: घ)

5.9 उत्तर: क)

5.10 उत्तर: ख)

5.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

5.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मारू बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मारू बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मारू बिहाग में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मारू बिहाग में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-6
वृंदावनी सारंग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
6.1	भूमिका
6.2	उद्देश्य तथा परिणाम
6.3	राग वृंदावनी सारंग
6.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय
6.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप
6.3.3	वृंदावनी सारंग राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत
6.3.4	वृंदावनी सारंग राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
6.4	सारांश
6.5	शब्दावली
6.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
6.7	संदर्भ
6.8	अनुशंसित पठन
6.9	पाठगत प्रश्न

6.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, विलंबित गत/मसीतखानी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

6.3 राग वृंदावनी सारंग

6.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - ऩि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां नि प, म रे, सां

पकड़ - रे म प नि प, म रे, प म रे, ऩि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है। ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृंदावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, ऩि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विषेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, मरे, प म रे, रे म रे आदि। राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद(नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे। इस राग का चलन तीनों सप्तकों में होता है।

वृंदावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृंदावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)। मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृंदावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृंदावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प़ ऩी सा रे, ऩी सा रे,)। मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प़ऩीप़। वृंदावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृंदावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मलहार अंग का प्रयोग अधिक होता है।

6.3.2 वृंदावनी सारंग राग का आलाप

1 सा, सा रे सा, सा, ऩी सा ऩी ऩी सा, रे ऽ सा सा

2 ऩी ऩी सा ऽ सा ऩी ऽ सा रे ऽ रे म रे ऽ ऩी सा रे ऽ साऽ

3 सा ऩी ऩी ऽ प़ ऽ प़ ऽ ऽ म़ प़ ऽ प़ प़ ऩी प ऽ

म़ प़ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

4 ऩी सा (म)रे म म प ऽ ऽ प म रे ऽ म रे ऽ रे

म प ऽ ऽ म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

5 (म)रे म म प ऽ ऽ प ऽ म प नी प ऽ प ऽ म म प ऽ

प नी प ऽ नी प नी प म रे ऽ रे म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

6 (म)रे म प नी नी ऽ सां ऽ सां ऽ नी सां रें ऽ रें मं

मं रें ऽ रें सां

7 नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रेंऽ मं रें नी नी सां ऽ सां

8 सां नी प ऽ नी सां नी प ऽ म प ऽ म रे ऽ प

म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

6.3.3 वृंदावनी सारंग राग विलंबित गत/मसीतखानी गत

राग: वृंदावनी सारंग **ताल: तीनताल** **लय: विलम्बित लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											निनि	प	मप	रे	म
											दिर	दा	दिर	दा	रा
प	प	प	निनि	प	मप	रे	म	रे	नि़	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
अंतरा															
											मम	प	पप	नि	नि
											दिर	दा	दिर	दा	रा
सां	सां	सां	सांसां	नि	सांसां	रें	मं	रें	नि	सां					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					
											सारें	नि	पम	रे	म
											दिर	दा	दिर	दा	रा
प	नि	नि	सारें	सां	निनि	प	म	रे	नि़	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	दा	रा					

6.3.4 वृंदावनी सारंग राग के तोड़े

- ऩीसारे   सारेम   मपनी   पनीसां

  निसांरें   सांरेंमं   मंरेंसां   रेंसांनीं

  सांनिप   निपम   पमरे   मरेसा   रेसाऩी

- ऩीसासारेसा   ऩीसासारेम   रेसासाऩीसा   ऩीसासारेम

  पमरेमरे   सासाऩीसा   ऩीसारेमप   निसांनिनिप

  मरेमम   रेसाऩीसा

- रेमपनी   मपनीसां   पनीसांरें   निसांरेंमं

  सांरेंमंपं   पंमंरेंसां   मंरेंसांनी   रेंसांनिप

  सांनीपम   निपमरे   ऩीसारेम   प---

  ऩीसारेम   प---   ऩीसारेम   प---

- सारेमम   रेमपप   मपनीनी   पनीसांसां

  नीसांरेंरें   सांरेंमंमं   मंमंरेंसां   रेंरेंसांनी

  सांसांनप   निनिपम   पपमरे   ममरेसा

- रेमरेमप   मपमपनी   पनीपनीसां   निसांनिसांरें

  सांरेंसरेंगं   मंरेंमंरेंसां   रेंसांरेंसांनी   सांनिसांनिप

  निपनिपम   पमपमरे   रेमरेसा   ऩीसा

रेमप- रेमरेसा ऩीसा रेमप-

रेमरेसा ऩीसा रेमप-

- सासासा रेरेरे ममम पपप
  नीनीनी सांसांसां रेंरेंरें रेंरेंरें
  सांसांसां नीनीनी पपप ममम
  रेरेरे सासासा
- ऩीसाऩीसा रेसाऩीसा रेमरेम पमपम
  मपमप निसांनिसां सांनीनीपनी नीपपमप
  मरेरेऩीसा सांनीनीपनी निपपमप मरेरेऩीसा
  सांनीनीपन निपपमप मरेरेऩीसा
- मंमंमं रेंरेंरें सांसांसां सांसांसां
  नीनीनी पपप ममम पपप
  ममम रेरेरे ममम रेरेरे सासासा
- ऩीसासारे ऩीसासारे ऩीसा ऩीसासारेम
  पमरेम मपपम मपपम मप
  मपपनीसां रेंसांसांनिसां पनीनीसां पनीनीसां
  पनी पनीसारेंसां नीनीपनी सांनीनीपनी
  नीपपमप मरेसाऩी-

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

6.2 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

6.3 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

6.4 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

6.5 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

6.6 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) काफी

घ) तोड़ी

6.7 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) <u>नि</u> ध प, म रे सा

ख) सां नि प, म

ग) <u>नि</u> <u>ध</u> प म <u>नी</u>

घ) सां <u>नी</u> प म

6.8 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

6.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल तीन ताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

6.10 वृंदावनी सारंग राग, सारंग तथा वृंदा रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

6.4 सारांश

वृंदावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। वृंदावनी सारंग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत/मसीतखानी गत, विलंबित लय में बजाया जाता है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

6.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।

- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

6.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ग)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: क)

6.6 उत्तर: ग)

6.7 उत्तर: घ)

6.8 उत्तर: ग)

6.9 उत्तर: ख)

6.10 उत्तर: ख)

6.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

6.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग में विलंबित गत/मसीतखानी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-7
मालकौंस राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
7.1	भूमिका
7.2	उद्देश्य तथा परिणाम
7.3	राग मालकौंस
7.3.1	मालकौंस राग का परिचय
7.3.2	मालकौंस राग का आलाप
7.3.3	मालकौंस राग का छोटा ख्याल 1
7.3.4	मालकौंस राग का छोटा ख्याल 2
7.3.5	मालकौंस राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
7.4	सारांश
7.5	शब्दावली
7.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
7.7	संदर्भ
7.8	अनुशंसित पठन
7.9	पाठगत प्रश्न

7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मालकौंस का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मालकौंस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मालकौंस का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मालकौंस राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मालकौंस राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मालकौंस राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मालकौंस राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मालकौंस राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मालकौंस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

7.3 राग मालकौंस

7.3.1 मालकौंस राग का परिचय

राग - मालकौंस

थाट – भैरवी

जाति – औडव-औडव

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

वर्जित स्वर – ऋषभ तथा पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम

समय – रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – चंद्रकौंस

आरोह:- सा ग म ध नी सां

अवरोह:- सां नी ध, म ग म, ग सा

पकड़:- ध़ ऩी सा म, ग म ग सा

मालकौंस राग, भैरवी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति औडव-औडव है। मालकौंस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षडज है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्जित होते हैं। इस राग का गायन समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज तथा मध्यम पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है।

यह एक प्रचीन राग है। राग में मध्यम स्वर पर न्यास अधिक किया जाता है (ध़ ऩी सा म, ग म ग सा)। मालकौंस राग को मध्य तथा मंद्र सप्तक में अधिक बजाया जाता है। यह गंभीर प्रकृति का राग है। राग रागिनी वर्गीकरण के अनुसार मालकौंस राग मुख्य छह पुरुष रागों के अंतर्गत आता है।

समय के अनुसार इस राग को अलग-अलग नामों से जाना गया जैसे कई जगह इसे मालव कौशिक, मालकोश, मंगल कौशिक, मालकंस आदि संज्ञा दी गई। यह कौंस अंग का प्रमुख राग है।

वर्तमान समय में कौंस अंग के रागों को प्रमुखता के साथ गाया बजाया जाता है। कौंस अंग के रागों में मुख्यतः चंद्रकौंस, मधुकौंस, जोगकौंस, कौंसी कान्हड़ा आदि प्रमुख है। कौंस अंग की विशेषता में ग सा तथा ग म ग सा स्वरों का प्रयोग प्रमुख है। ध ग स्वरों की संगति कौंस अंग की मुख्य विशेषता है।

इसका समप्रकृतिक राग चंद्रकौंस है। मालकौंस में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा चंद्रकौंस में शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (मालकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा, चंद्रकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा)। मालकौंस में निषाद पर न्यास नहीं होता है तथा चंद्रकौंस में निषाद पर न्यास किया जाता है। (मालकौंस: ध़ ऩी ध़ सा ग म, ग सा, चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी ऩी सा)। मालकौंस राग में सा से म पर सीधे आते हैं जबकि चंद्रकौंस राग में में सा से म पर सीधे नहीं आते हैं (मालकौंस: ध़ ऩी सा म, म ग सा, , चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी, ऩी सा।

7.3.2 मालकौंस राग का आलाप

- सा - ध़ ऩी सा - ऩी सा म - ग सा - सा - - ऩी ध़ - - म़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा -, ऩी सा ग - सा - - ऩी सा -।
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ म़, म़ ग़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा, ग म ग सा सा - ऩी सा।
- ऩी सा म - ग म - म -, ग म ध म, ग म ध म ग सा - सा - ऩी ध़ सा, ध़ ऩी ऩी सा - सा।
- ऩी सा ग ग म - म ध म - म ध नी - ध म -, म ध नी नी - - ऩी सा ग म ध नी नी सं - सां - सां।
- नी सां नी ध म ग म ध नी नी सां - गं सां नी नी सां -, नी सां गं गं मं - मं - गं मं धं धं मं, गं मं गं सां सां नी सां - सां गं मं गं सां सां -।
- सां सां नी, ध ध म ग म ध म - म ग म ग सा - सा - ऩी ध़ सा - ध़ ऩी ऩी सा।
- ऩी सा ग म ध नी नी सां नी ध नी ध म, ग म ध नी ध म - ग म ग सा ध़ ऩी सा -।

7.3.3 मालकौंस राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) 1

राग: मालकौंस **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

स्थायी

कोयलिया बोले अमुवा की डाल पर

ऋतु बसंत को देत संदेसवा

अंतरा

नव कलियन पर गूंजत भंवरा,

उनके संग करत रंगरलिया

यही बसंत को देत संदेसवा

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सां	सांगं	सांनी	सां	ध	म	ध	नी
								को	यऽ	लिऽ	या	बो	ले	अ	मु
सां	-	सां	ध	नी	ध	म	म								
वा	ऽ	की	डा	ऽ	ल	प	र								
								ग	ग	म	धनी	सां	नी	सां	सां
								ऋ	तु	ब	संऽ	ऽ	त	को	ऽ
ग	-	म	ध	ग	म	ग	सा								
दे	ऽ	त	सं	दे	स	वा	ऽ								
								सां	सांगं	सांनी	सां	ध	म	ध	नी
								को	यऽ	लिऽ	या	बो	ले	अ	मु
सां	-	सां	ध	नी	ध	म	म								
वा	ऽ	की	डा	ऽ	ल	प	र								

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अंतरा															
								ग	ग	म	म	ध	ध	नी	ध
								न	व	क	लि	य	न	प	र
सां	-	सां	सां	गं	नी	सां	सां								
गूं	ऽ	ज	त	भं	व	रा	ऽ								
								नी	नी	नी	नी	सां	सां	सां	सां
								उ	न	के	ऽ	सं	ऽ	ग	क
ध	ध	ध	नी	ध	ध	म	म								
र	त	रं	ग	र	लि	या	ऽ								
								सां	सां	मं	गं	सां	सां	सां	सां
								य	ही	ऽ	ब	सं	ऽ	त	को
ध	म	ध	नी	ध	म	ग	सा								
दे	ऽ	त	सं	दे	स	वा	ऽ								

7.3.4 मालकौंस राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) 2

राग: मालकौंस **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

स्थायी

मुख मोर मोर मुसकात जात,
अति छबीली नार चली पत संगाय।

अंतरा

काहूँ की अखियाँ रसीली मन भाई,
या बिध सुन्दर वा अकुलाई, चली जात सब सखियन साथ।

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
						ग	म	ग	-	सा	सा	-	साऩी	ध़	ऩी
						मु	ख	मो	ऽ	र	मो	ऽ	रऽ	मु	स
सा	-	म	म	-	ग										
का	ऽ	त	जा	ऽ	त										
						ग	म	ग	-	सा	सा	-	साऩी	ध़	ऩी
						मु	ख	मो	ऽ	र	मो	ऽ	रऽ	मु	स
सा	-	म	म	-	ग										
का	ऽ	त	जा	ऽ	त										
						म	$ग^{म}$	म	ध	नी	सां	-	सां	सां	सांनी
						अ	ति	छ	बी	ली	ना	ऽ	र	च	लीऽ
ध	नी	ध	म	-	ग										
प	त	सं	गा	ऽ	य										

x				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
अंतरा															
								-	म	ग	ग	म	म	ध	ध
								ऽ	का	हूँ	की	अ	खि	याँ	र
नी	नी	सां	सां	सां	-	सां	-								
सी	ली	म	न	भा	ऽ	ई	ऽ								
								$^{\text{नी}}$सां	-	सां	सां	(सां)	-	नी	ध
								या	ऽ	बि	ध	सुं	ऽ	द	र
$^{\text{ध}}$म	ध	नी	नी	ध	नी	ध	म								
वा	ऽ	अ	कु	ला	ऽ	ई	ऽ								
								सां	मं	-	गं	मं	गं	सां	सां
								च	ली	ऽ	जा	ऽ	त	स	ब
ध	नी	धध	म	-	$^{\text{म}}$ग										
स	खि	यन	सा	ऽ	थ										

7.3.5 मालकौंस राग की तानें

• ऩी सा	ग म	ध म	ग म	ग म	ध म	ग म	ग ऩी
• सा ग	- म	- ध	नी ध	म ध	म ग	म ग	सा ऩी
• ध़ ऩी	सा ग	सा ऩी	ध़ ऩी	- सा	- ग	सा ऩी	सा -
• सां -	नी सां	ध नी	ध म	ध -	म ध	ग म	ग सा
• सा ग	म ध	म ग	- ग	ध -	म ग	म ग	सा ऩी
• म ग	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	ऩी ऩी	सा सा
• ध़ ऩी	ध़ सा	ऩी ग	सा सा	ग म	ध म	ग म	ग सा
• सा ग	म म	ग म	ध ध	नी नी	ध म	ग म	ग सा
• सा ग	म ध	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	सा -
• ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ग	सा ग	सा -
• सा ग	म ग	म ध	म ग	म ध	नी ध	म ग	ऩी सा
• सा ग	म ग	सा ग	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	ग सा
• म ध	नी ध	म ग	म ध	नी सां	नी ध	म ग	सा -
• ग म	ध नी	सां गं	नी सां	नी ध	म ग	म ग	सा -
• सा म	ग म	ध नी	ध म	ग म	ध म	ग म	ग सा

•	ध म	ग म	ध नी	ध म	ग म	ग सा	ऩी ऩी	ग सा
•	म म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध ऩी	सा ग	म ग	सा -
•	म ग	म ध	नी नी	ध म	ग म	ध नी	सां सां	नी सां
	नी नी	ध नी	ध म	ग म	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा
•	सा ग	म ग	सा ग	म ध	म ग	सा ग	म ध	नी ध
	म ग	सा ग	म ध	नी सां	नी ध	म ग	म ग	सा -
•	ग ग	सा ऩी	ध़ -	- -	ध़ ऩी	सा ग	सा ऩी	सा ऩी
	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	ग -	म ग	- ग	सा ऩी
•	सा ऩी	ध़ ऩी	सा ग	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ग
	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ध	म ग	ऩी ऩी	सा सा
•	सा ग	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म म	ग म
	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	ऩी ऩी	सा सा
•	सा म	ग म	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	सा ग	ऩी सा
	नी ध	म ग	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	ग सा
•	ध़ ऩी	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	ध़ सा	ऩी ग	सा म	ग म
	ध म	ग म	नी ध	म ग	म ग	सा ग	ऩी ऩी	सा -
•	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा म

	ग म	नी ध	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	सा -
•	म म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध ध	म ध	म ग	सा ग
	ऩी सा	नी नी	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा -
•	सां सां	नी सां	नी नी	ध म	ग म	ध नी	सां गं	नी सां
	ध नी	ध म	ग म	ध म	ग म	ग सा	ध़ ऩी	सा -
•	म ग	सा ऩी	ध़ -	- -	ध़ ऩी	सा ग	सा ऩी	सा ऩी
	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	ग -	म ग	- ग	सा ऩी
•	सा ऩी	ध़ ऩी	सा ग	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ग
	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ध	म ग	ऩी ऩी	सा सा

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 मालकौंस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

7.2 मालकौंस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

7.3 मालकौंस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

7.4 मालकौंस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

7.5 मालकौंस राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

7.6 मालकौंस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

7.7 मालकौंस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ध नी

घ) ध नि सां नी ध म ग

7.8 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

7.9 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

7.10 मालकौंस राग, चंद्रकौंस तथा बिलावल रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

7.4 सारांश

मालकौंस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मालकौंस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

7.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

7.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: ग)

7.2 उत्तर: घ)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: क)

7.5 उत्तर: ग)

7.6 उत्तर: ग)

7.7 उत्तर: घ)

7.8 उत्तर: ग)

7.9 उत्तर: ख)

7.10 उत्तर: ख)

7.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

7.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

7.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मालकौंस का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मालकौंस का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मालकौंस के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मालकौंस में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-8
मारू बिहाग राग का छोटा ख्याल (मध्य लय/द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
8.1	भूमिका
8.2	उद्देश्य तथा परिणाम
8.3	राग मारू बिहाग
8.3.1	मारू बिहाग राग का परिचय
8.3.2	मारू बिहाग राग का आलाप
8.3.3	मारू बिहाग राग का छोटा ख्याल
8.3.4	मारू बिहाग राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
8.4	सारांश
8.5	शब्दावली
8.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
8.7	संदर्भ
8.8	अनुशंसित पठन
8.9	पाठगत प्रश्न

8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मारू बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मारू बिहाग का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मारू बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- मारू बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मारू बिहाग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग मारू बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

8.3 राग मारू बिहाग

8.3.1 मारू बिहाग राग का परिचय

राग - मारू बिहाग

थाट – कल्याण

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

न्यास के स्वर - गंधार, पंचम, निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह – ऩी सा ग, मं प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं ग मं ग रे सा

पकड़ - ध प मं ग मं ग, रे सा

राग मारू बिहाग, कल्याण थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति औडव-संपूर्ण है। मारू बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। मारू बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग मं।

तीव्र मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह में किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, मं ग मं ग या मं प मं ग। इसके शुद्ध मध्यम का आरोह में केवल षड़ज के साथ किया जाता है जैसे - ऩी सा म ग मं प। मारू बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्ष करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे - सां नि, ^ध^प, मं प मं ग मं ग ^रे^सा। अवरोह में मं ग मं ग स्वरों की संगति प्रमुख रूप से लगती है।

8.3.2 मारू बिहाग राग का आलाप

- सा ऩी ऩी सा, ऩी सा रे सा ऩी ऩी सा
- सा ऩि ध़ प़, प़ ऩी नी़ सा, सा ऩि सा ग, रे सा,
- सा म, ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा सा
- ऩी सा ग ग मं मं प, प, प, मं ग मं ग रे सा
- सा म, ग मं मं प, मं प ध प, प, मं प मं ग मं प, प
- मं प ध प, नी ध प, प नि नी सां, सां, रें सां

- नी सां रें सां, नी ध प नी नी सां गं रें सां, सां ग मं॑ मं॑ पं मं॑ गं मं॑ गं रें सां, सां,

- सां नी ध प, म॑ प म॑ ग म॑ ग रे सा ऩी ऩी सा, सा

8.3.3 मारू बिहाग राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)

राग: मारू बिहाग **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

स्थाई

नैना बसी छबि तोरी प्यारी
रसना रटे गिरधारी मुरारी

अंतरा

जब से गए मोरी सुधहूं ना लीन्हीं
बिसरत नाही घरी री

	x				2				0				3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											ऩी	सा	गम॑	प	म॑
											नै	ऽ	नाऽ	ऽ	ब
प	-	-	धप	म॑ग	म॑	ध	पम॑	ग	रे	सा					
सी	ऽ	ऽ	छऽ	वीऽ	तो	ऽ	रीऽ	प्या	ऽ	रीऽ					
											सा	ऩी	ऩ	-	साम
											र	स	ना	ऽ	रऽ
ग	-	ग	म॑	प	नि	-सां	नि	धप	म॑	रेसा					
टे	ऽ	गि	रि	धा	री	ऽ	मुऽ	राऽ	ऽऽ	रीऽ					

	x				2				0				3		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
											ग	म॑	प	नि	नि
											ज	ब	से	ऽ	ग
सां	-	सां	सां	सां	गं	गं	म॑	गं	रें	सां					
ये	ऽ	मो	री	सु	ध	हूं	न	ली	ऽ	नी					
											गं	म॑	पं	-	सां
											बि	स	र	ऽ	त
नि	-	धप	म॑प	गम॑	पनि	सांनि	धप	धप	म॑ग	रेसा					
ना	ऽ	हींऽ	घऽ	रीऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ	ऽऽ					

8.3.5 मारू बिहाग राग की तानें

- ऩीसा गम॑ साग म॑प गम॑ पनी म॑प नीसां
  पनी सांरें रेंसां नीध सांनी धप नीध पम॑
  धप म॑ग पम॑ गरे म॑ग रेसा
- ऩीसा रेरे सांनी धप म॑प म॑प धप धप

ऩीसा गम॑ प- -- ऩीसा गम॑ प- --
ऩीस गम॑

- साऩी धप म॑प म॑ग म॑ग रेस ऩीसा गम॑
  नीनी धप म॑प धप म॑प म॑ग म॑ग रेसा

- ऩीसा गम॑ पम॑ गम॑ गम॑ पनी सांनी धप
  म॑प नीसां सांनी धप ऩीसा गम॑ प- --
  ऩीसा गम॑ प- -- ऩीसा गम॑

- ऩीऩी ऩीसा सासा गग गम॑ म॑म॑ पप पनी
  नीनी सांसां सांनी नीनी धध धप पप म॑म॑
  म॑ग गग रेरे रेसा सासा

- सासा साम॑ म॑म॑ गग गप पप म॑म॑ म॑नी
  नीनी पप पसां सांसां सांसां सांनी नीनी पप
  पम॑ म॑म॑ नीनी नीप पप म॑म॑ म॑ग गग

- ऩीसा ऩीसा गसा गसा गम॑ गम॑ गप म॑प म॑प
  नीप नीप नीसां सांनी सांनी पनी पनी पम॑ पम॑
  पम॑ गम॑ गम॑ गरे गरे गरे साऩी साग म॑प
  नीसां -- -- ऩीसा गम॑ पनी सां- -- ऩीस
  गम॑ पनी सां-- --

• ऩीसा	साग	ऩीसा	साग	ऩीसा	ऩीसा	गम॑
पम॑	गम॑	गम॑	म॑प	गम॑	म॑प	गम॑
गम॑	पनी	सांनी	धप	पनी	नीसां	पनी
नीसां	पनी	पनी	सारें	रेंसां	नीसां	गरें
सारें	रेंसां	नीध	सांनी	धनी	म॑ग	रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 मारू बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) ध

8.2 मारू बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

8.3 मारू बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम प्रहर

घ) दोपहर

8.4 मारू बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

8.5 मारू बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) प

ग) नी

घ) सा

8.6 मारू बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) भैरव

ख) कल्याण

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

8.7 मारू बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि सां ध प, मं ग

ख) मं ध सां नि ध प, मं

ग) ध प मं ग मं ग रे

घ) ध नि सां नी ध म ग

8.8 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

8.9 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

8.10 मारू बिहाग राग, बिहाग तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

8.4 सारांश

मारू बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मारू बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

8.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

8.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ख)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: घ)

8.5 उत्तर: क)

8.6 उत्तर: ख)

8.7 उत्तर: ग)

8.8 उत्तर: घ)

8.9 उत्तर: क)

8.10 उत्तर: ख)

8.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

8.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मारू बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मारू बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मारू बिहाग के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मारू बिहाग में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-9
वृंदावनी सारंग राग का छोटा ख्याल (मध्य/द्रुत लय ख्याल) (गायन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
9.1	भूमिका
9.2	उद्देश्य तथा परिणाम
9.3	राग वृंदावनी सारंग
9.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय
9.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप
9.3.3	वृंदावनी सारंग राग का छोटा ख्याल
9.3.4	वृंदावनी सारंग राग की तानें
	स्वयं जांच अभ्यास 1
9.4	सारांश
9.5	शब्दावली
9.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
9.7	संदर्भ
9.8	अनुशंसित पठन
9.9	पाठगत प्रश्न

9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गा सकेंगे।

9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य/द्रुत लय) तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

9.3 राग वृंदावनी सारंग

9.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय

राग - वृंदावनी सारंग

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, नि) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - ऩि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां नि प, म रे, सां

पकड़ - रे म प नि प, म रे, प म रे, ऩि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है। ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृंदावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, ऩि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विषेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, मरे, प म रे, रे म रे आदि। राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद (नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे। इस राग की चलन तीनों सप्तकों में समान रूप से होता है।

वृंदावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृंदावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)। मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृंदावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृंदावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प़ ऩी सा रे, ऩी सा रे,)। मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प़नीप़। वृंदावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृंदावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल

निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मल्हाहार अंग का प्रयोग अधिक होता है।

9.3.2 वृंदावनी सारंग राग का आलाप

- सा, सा रे सा, सा, ऩी सा ऩी ऩी सा, रे ऽ सा सा
- ऩी ऩी सा ऽ सा ऩी ऽ सा रे ऽ रे म रे ऽ ऩी सा रे ऽ
  साऽ
- सा ऩी ऩी ऽ प़ ऽ प़ ऽ ऽ म़ प़ ऽ प़ प़ ऩी प ऽ
  म़ प़ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ
- ऩी सा ^मरे म म प ऽ ऽ प म रे ऽ म रे ऽ रे
  म प ऽ ऽ म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ
- ^मरे म म प ऽ ऽ प ऽ म प नी प ऽ प ऽ म म प ऽ
  प नी प ऽ नी प नी प म रे ऽ रे म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ
- रे म प नी नी ऽ सां ऽ सां ऽ नी सां रें ऽ रें मं
  मं रें ऽ रें सां
- नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रेंऽ मं रें नी नी सां ऽ सां
- सां नी प ऽ नी सां नी प ऽ म प ऽ म रे ऽ प
  म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

9.3.3 वृंदावनी सारंग राग छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल)

राग: वृंदावनी सारंग **ताल: तीनताल** **लय: द्रुत लय**

स्थायी

बन बन ढूंढन जाऊं
कितहूं छिप गए कृष्ण मुरारी

अंतरा

सीस मुकुट और कानन कुण्डल
बंसीधर मनरंग फिरत गिरधारी।

X				**2**				**0**				**3**			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
								सां	सां	नी	सां	नी	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न
रे	-	म	-	प	-	-	-								
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ								
								म	प	सां	-	नी	प	म	रे
								कि	त	हुं	ऽ	छि	प	ग	ए
रे	म	नी	पम	रे	-	ऩी	सा								
कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	री	ऽ								
								सां	सां	नी	सां	नी	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न
रे	-	म	-	प	-	-	-								
जा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊं	ऽ	ऽ	ऽ								
								म	प	सां	-	नी	प	म	रे
								कि	त	हुं	ऽ	छि	प	ग	ए
रे	म	नी	पम	रे	-	ऩी	सा								
कृ	ऽ	ष्ण	मु	रा	ऽ	री	ऽ								
								-	-	-	-	-	-	-	-
								ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
अन्तरा															
म		प	प	<u>नी</u>	प	नी	नी								
शी	ऽ	श	मु	कु	ट	औ	र								
								सां	-	सां	सां	रें	-	नी	सां
								का	ऽ	न	न	कुं	ऽ	ड	ल
नी	सां	रें	ऽ	मं	मं	रें	सां								
बं	ऽ	सी	ऽ	ध	र	म	न								
								नी	सां	रें	सां	<u>नी</u>	सां	नी	प
								रं	ऽ	ग	फि	र	त	गि	र
मप	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीसां	रेंसां	<u>नी</u>	प								
धा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ								
								सां	सां	नी	सां	<u>नी</u>	-	प	पम
								ब	न	ब	न	ढूं	ऽ	ढ	न

9.3.4 वृंदावनी सारंग राग की तानें

• ऩीसा	रेसा	रेम	मप	नीप	नीसां		
निसां	रेंसां	रेंमं	मंरें	सारें	सांनीं		
सांनि	पनि	पम	पम	रेम	रेसा		
• ऩीसा	सा	रेसा	ऩीसा	सारे	मरे	सासा	ऩीसा
ऩीसा	सारे	मप	मरे	मरे	सासा	ऩीसा	ऩीसा
रेम	पनि	सांनि	निप	मरे	मम	रेसा	ऩीसा
• रेम	पनी	मप	नीसां	पनी	सारें	निसा	रेंमं
सारें	मंपं	पंमं	रेंसां	मंरें	सांनी	रेंसां	निप
सांनी	पम	निप	मरे	ऩीसा	रेम	प-	--
ऩीसा	रेम	प-	--	ऩीसा	रेम	प-	--
• सारे	मम	रेम	पप	मप	नीनी	पनी	सांसां
नीसां	रेंरें	सारें	मंमं	मंमं	रेंसां	रेंरें	सांनी
सांसां	नीप	निनि	पम	पप	मरे	मम	रेसा
• रेम	रेम	पम	पम	पनी	पनी	पनी	सांनि
सांनि	सारें	सारें	सरें	गंमं	रेंमं	रेंसां	रेंसां
रेंसां	नीसां	निसां	निप	निप	निप	मप	पम

रेरे मरे साऩी सारे मप -रे मरे साऩी

सारे मप -रे मरे साऩी सा रे मप रे-

- ऩीसा ऩीसा रेसा ऩीसा रेम रेम पम पम

  मप मप निसां निसां सांनी नीप नीनी पप

  मप मरे रेऩी सासां नीनी पनी निप पम

  पम रेरे ऩीसा सांनी नीप नीनि पप मप

  मरे रेऩी सा-

- मंमं रेंरें सांसां सांसां नीनी पप मम पप

  मम रेरे मम रेरे सासा ऩीऩी प़प़ ऩीसा

- ऩीसा सारे ऩीसा सारे ऩीसा ऩीसा सारे मप मरे

  मम पप मम पप मम पम पप नीसां रेंसां

  सांनि सांप नीनी सांप नीनी सांप नीप नीसां रेंसां

  नीनी पनी सांनी नीप नीनी पप मप मरे साऩी

- रेसा ऩीसा रेम पनी सारें सांनी पम रेसा

- रेम पनी सांनी पम रेम रेसा ऩीसा रेसा

- पप मप मप मरे रेम पम रेम रेसा

  ऩीसा रेसा रे- ऩीसा रेसा रे- ऩीसा रेसा

•	रेम	पनी	सां-	रेम	पनी	सां-	रेम	पनी
•	रेम	पनी	सां-	सां-	सां-	--	रेम	पनी
	सां-	सां-	सां-	--	रेम	पनी	सां-	सां-
•	नीनी	पनी	नीप	मप	रेम	रेसा	ऩीसा	रेसा
	ऩीसा	रेम	पनी	पम	मप	नीसां	रेंमं	रेंसां
	मंमं	रेंसां	नीसां	नीप	मप	मरे	सासा	ऩीसा
•	मम	रेसा	ऩीसा	रेसा	ऩीप़	म़प़	ऩीऩी	सा-
	सारे	मरे	मप	मप	नीप	नीसां	नीसां	रेसां
	नीप	मप	मप	नीप	मप	मरे	रेम	पम
	रेम	रेसा	ऩीप़	ऩीसा	ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
•	प़ऩी	सासा	ऩीसा	रेरे	सारे	मम	रेम	पप
	मप	नीनी	पनी	सांसां	नीसां	रेंरें	रेंमं	रेंसां
	नीसां	रेंसां	नीप	मप	मरे	सासा	ऩी-	सा-
•	सांनी	पम	रेम	रेसा	रे -	- -	सांनी	पम
	रेम	रेसा	रे -	- -	सांनी	पम	रेम	रेसा
•	प़ऩी	सारे	ऩीसा	रेम	सारे	मप	रेम	पनी
	मप	नीसां	पनी	सांरें	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीसां

नीनी	पनी	नीप	मप	रेम	पम	रेम	रेसा
ऩीसा	रेसा	रे -	ऩीसा	रेसा	रे-	ऩीसा	रेसा

-

रेम	रेम	पम	रेसा	मप	मप	नीनी	पम
नीसां	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीप	मप	मप	नीसां
पनी	सांरें	सांनी	पप	नीप	मप	पम	रेरे
मरे	सासा	ऩीसा	रेसा	ऩीप	ऩीसा	रेम	रेम

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

9.2 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

9.3 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

9.4 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

9.5 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

9.6 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) काफी

घ) तोड़ी

9.7 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म रे सा

ख) सां नि प, म

ग) नि ध प म नी

घ) सां नी प म

9.8 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

9.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल तीन ताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

9.10 वृंदावनी सारंग राग, सारंग तथा वृंदा रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

9.4 सारांश

वृंदावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की गायन विधा के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। वृंदावनी सारंग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, मध्य लय/ द्रुत लय, में गाया जाता है। इसमें तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

9.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई जाती हो उसे विलंबित ख्याल/बड़ा ख्याल कहते हैं।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।

- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।
- लय: गायन/वादन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

9.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: ग)

9.2 उत्तर: घ)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: क)

9.5 उत्तर: ग)

9.6 उत्तर: ग)

9.7 उत्तर: घ)

9.8 उत्तर: ग)

9.9 उत्तर: ख)

9.10 उत्तर: ख)

9.7 संदर्भ

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

अत्रे, डॉ. प्रभा. (2007). स्वरंजनी रात्रिकालीन रागों की बंदिशों का संकलन, बी. आर. रिदम्स, दिल्ली।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

9.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

मिश्र, शंकर लाल (1998).नवीन ख्याल रचनावली, अभिषेक पब्लिकेशन, चंडीगढ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

9.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग के छोटा ख्याल (मध्य लय/ द्रुत लय ख्याल) को लिखिए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में पांच तानों को लिखिए।

इकाई-10
मालकौंस राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
10.1	भूमिका
10.2	उद्देश्य तथा परिणाम
10.3	राग मालकौंस
10.3.1	मालकौंस राग का परिचय
10.3.2	मालकौंस राग का आलाप
10.3.3	मालकौंस राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
10.3.4	मालकौंस राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
10.3.5	मालकौंस राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
10.4	सारांश
10.5	शब्दावली
10.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
10.7	संदर्भ
10.8	अनुशंसित पठन
10.9	पाठगत प्रश्न

10.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मालकौंस का परिचय, आलाप, की द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मालकौंस के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मालकौंस का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मालकौंस राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मालकौंस राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मालकौंस राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मालकौंस राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मालकौंस राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मालकौंस के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

10.3 राग मालकौंस

10.3.1 मालकौंस राग का परिचय

राग - मालकौंस

थाट – भैरवी

जाति – औडव-औडव

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

वर्जित स्वर – ऋषभ तथा पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम

समय – रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – चंद्रकौंस

आरोह:- सा ग म ध नी सां

अवरोह:- सां नी ध, म ग म, ग सा

पकड़:- ध़ ऩी सा म, ग म ग सा

मालकौंस राग, भैरवी थाट का एक मधुर राग है। इस राग की जाति औडव-औडव है। मालकौंस राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षडज है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। राग में ऋषभ तथा पंचम स्वर वर्जित होते हैं। इस राग का वादन समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज तथा मध्यम पर न्यास किया जाता है।

इस राग की प्रकृति गंभीर है। यह एक प्रचीन राग है। राग में मध्यम स्वर पर न्यास अधिक किया जाता है (ध़ ऩी सा म, ग म ग सा)। मालकौंस राग को मध्य तथा मंद्र सप्तक में अधिक बजाया जाता है। यह गंभीर प्रकृति का राग है। राग रागिनी वर्गीकरण के अनुसार मालकौंस राग मुख्य छह पुरुष रागों के अंतर्गत आता है। समय के अनुसार इस राग को अलग-अलग नामों से जाना गया जैसे कई जगह इसे मालव कौशिक, मालकोश, मंगल कौशिक, मालकंस आदि संज्ञा दी गई। यह कौंस अंग का प्रमुख राग है।

वर्तमान समय में कौंस अंग के रागों को प्रमुखता के साथ गाया बजाया जाता है। कौंस अंग के रागों में मुख्यतः चंद्रकौंस, मधुकौंस, जोगकौंस, कौंसी कान्हड़ा आदि प्रमुख है। कौंस अंग की विशेषता में ग सा तथा ग म ग सा स्वरों का प्रयोग प्रमुख है। ध ग स्वरों की संगति कौंस अंग की मुख्य विशेषता है।

इसका समप्रकृतिक राग चंद्रकौंस है। मालकौंस में कोमल निषाद का प्रयोग होता है तथा चंद्रकौंस में शुद्ध निषाद का प्रयोग होता है (मालकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा, चंद्रकौंस: ध़ ऩी सा ग म ग सा)। मालकौंस में निषाद पर न्यास नहीं होता है तथा चंद्रकौंस में निषाद पर न्यास किया जाता है। (मालकौंस: ध़ ऩी ध़ सा ग म, ग सा, चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी ऩी सा)। मालकौंस राग में सा से म पर सीधे आते हैं जबकि चंद्रकौंस राग में में सा से म पर सीधे नहीं आते हैं (मालकौंस: ध़ ऩी सा म, म ग सा, , चंद्रकौंस: सा ग म ग सा ऩी, ऩी सा।

10.3.2 मालकौंस राग का आलाप

- सा - ध़ ऩी सा - ऩी सा म - ग सा - सा - - ऩी ध़ - - म़ म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा -, ऩी सा

  ग - सा - - ऩी सा -।

- सा ऩी ध़ ऩी ध़ म़, म़ ग म़ ध़ ऩी ऩी सा - सा, ग म ग सा सा - ऩी सा।

- ऩी सा म - ग म - म -, ग म ध म, ग म ध म ग सा -

  सा - ऩी ध़ सा, ध़ ऩी ऩी सा - सा।

- ऩी सा ग ग म - म ध म - म ध नी - ध म -,

  म ध नी नी - - ऩी सा ग म ध नी नी सं - सां - सां।

- नी सां नी ध म ग म ध नी नी सां - गं सां नी नी सां -,

  नी सां गं गं मं - मं - गं मं धं धं मं, गं मं गं सां सां नी सां - सां गं मं गं सां सां -।

- सां सां नी, ध ध म ग म ध म - म ग म ग सा - सा - ऩी ध़ सा - ध़ ऩी ऩी सा।

- ऩी सा ग म ध नी नी सां नी ध नी ध म,

  ग म ध नी ध म - ग म ग सा ध़ ऩी सा -।

10.3.3 मालकौंस राग द्रुत गत/रजाखनी गत 1

राग: मालकौंस **ताल: तीन ताल** **लय: द्रुत लय**

x				2				0				3			
1	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**
स्थाई															
								म	गग	सा	ध़ऽ	ऽऩी	ऩी	सा	गग
								दा	दिर	दा	राऽ	ऽदा	रा	दा	दिर
म	ऽ	ध	नी	ग	मम	ग	सा								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								ऩी	सासा	ग	ध़	ऽऩी	ऩी	सा	ग
								दा	दिर	दा	रा	ऽदा	रा	दा	रा
म	ऽ	ग	म	ग	ऩीऩी	ग	सा								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								म	गग	म	ध	सां	ऽ	सां	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	ऽ	दा	रा
नीनी	सांसां	गंगं	नीनी	सां	नीध	ऽम	गऽ								
दिर	दिर	दिर	दिर	दा	दिर	ऽदा	राऽ								
अन्तरा															
								ग	मम	ध	नी	ध	नीनी	सां	नी
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	ऽ	सां	सां	नी	धध	सां	ऽ								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	ऽ								
								गं	मंमं	गं	सां	नी	सांसां	गं	सां
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सांसां	नीनी	धध	मम	गऽ	मग	ऽग	साऽ								
दिर	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ								

10.3.4 मालकौंस राग   द्रुत गत/रजाखनी गत 2

राग: मालकौंस   **ताल: तीन ताल**   **लय: द्रुत लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सा	मम	गग	सासा	ऩीसा	साऩी	-ध़	ऩी
								दा	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दा	रा
सा	-सा	सा	म	-ग	म	ग	सा								
दा	ऽर	दा	दा	ऽर	दा	दा	रा								
								म	गग	मम	ग	-म	म	ध	नी
								दा	दिर	दिर	दा	ऽरा	दा	दा	रा
सांनी	धनी	धम	धम	गम	गसा	ऩीसा	ध़ऩी								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								
अन्तरा															
								ग	मम	ध	ग-	-म	म-	ध	नी
								दा	दिर	दा	दाऽ	ऽर	दाऽ	दा	रा
सां-	-सां	सां-	सा-	नी	ध	सां	ऽ								
दाऽ	ऽर	दाऽ	रऽ	दा	रा	दा	ऽ								
								सां	मंमं	गंगं	मंमं	गं-	गंसां	-सां	नी-
								दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ
सांनी	धनी	धम	गम	गम	धम	गम	गसा								
दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर	दिर								

10.3.5 मालकौंस राग के तोड़े

- ऩी सा ग म ध म ग म ग म ध म ग म ग ऩी
- सा ग - म - ध नी ध म ध म ग म ग सा ऩी
- ध़ ऩी सा ग सा ऩी ध़ ऩी - सा - ग सा ऩी सा -
- सां - नी सां ध नी ध म ध - म ध ग म ग सा
- सा ग म ध म ग - ग ध - म ग म ग सा ऩी
- म ग म ग सा ग ऩी सा ध़ ऩी सा ग ऩी ऩी सा सा
- ध़ ऩी ध़ सा ऩी ग सा सा ग म ध म ग म ग सा
- सा ग म म ग म ध ध नी नी ध म ग म ग सा
- सा ग म ध म ग सा ग ऩी सा ध़ ऩी सा ग सा -
- ग म ग सा ऩी सा ध़ ऩी सा ग म ग सा ग सा -
- सा ग म ग म ध म ग म ध नी ध म ग ऩी सा
- सा ग म ग सा ग ऩी सा ग म ध म ग म ग सा
- म ध नी ध म ग म ध नी सां नी ध म ग सा -
- ग म ध नी सां गं नी सां नी ध म ग म ग सा -
- सा म ग म ध नी ध म ग म ध म ग म ग सा

•	ध म	ग म	ध नी	ध म	ग म	ग सा	ऩी ऩी	ग सा
•	म म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध ऩी	सा ग	म ग	सा -
•	म ग	म ध	नी नी	ध म	ग म	ध नी	सां सां	नी सां
	नी नी	ध नी	ध म	ग म	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा
•	सा ग	म ग	सा ग	म ध	म ग	सा ग	म ध	नी ध
	म ग	सा ग	म ध	नी सां	नी ध	म ग	म ग	सा -
•	ग ग	सा ऩी	ध़ -	- -	ध़ ऩी	सा ग	सा ऩी	सा ऩी
	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	ग -	म ग	- ग	सा ऩी
•	सा ऩी	ध़ ऩी	सा ग	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ग
	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म ध	म ग	ऩी ऩी	सा सा
•	सा ग	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	म म	ग म
	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	ऩी ऩी	सा सा
•	सा म	ग म	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	सा ग	ऩी सा
	नी ध	म ग	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	ग सा
•	ध़ ऩी	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	ध़ सा	ऩी ग	सा म	ग म
	ध म	ग म	नी ध	म ग	म ग	सा ग	ऩी ऩी	सा -
•	ऩी सा	ग म	ध म	ग म	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा म

	ग म	नी ध	म ग	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	सा ग	सा -
•	म म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध ध	म ध	म ग	सा ग
	ऩी सा	नी नी	ध म	ग म	ग सा	ऩी सा	ध़ ऩी	सा -
•	सां सां	नी सां	नी नी	ध म	ग म	ध नी	सां गं	नी सां
	ध नी	ध म	ग म	ध म	ग म	ग सा	ध़ ऩी	सा -
•	ग ग	म ग	सा ग	म ध	म ग	सा ग	म ध	नी ध
	म ग	सा ग	म ध	नी सां	नी ध	म ग	म ग	सा -
•	सा ऩी	सा ग	ऩी सा	ध़ ऩी	ध़ सा	ऩी ग	सा म	ग म
	म ध	ग म	नी ध	म ग	म ग	सा ग	ऩी ऩी	सा -

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 मालकौंस राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

10.2 मालकौंस राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

10.3 मालकौंस राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

10.4 मालकौंस राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

10.5 मालकौंस राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

10.6 मालकौंस राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

10.7 मालकौंस राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) ध नि ध प म ध नी

घ) ध नि सां नी ध म ग

10.8 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

10.9 मालकौंस राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

10.10 मालकौंस राग, चंद्रकौंस तथा बिलावल रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

10.4 सारांश

मालकौंस राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मालकौंस राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

10.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

10.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 उत्तर: ग)

10.2 उत्तर: घ)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: क)

10.5 उत्तर: ग)

10.6 उत्तर: ग)

10.7 उत्तर: घ)

10.8 उत्तर: ग)

10.9 उत्तर: ख)

10.10 उत्तर: ख)

10.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 4-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.8 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

10.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मालकौंस का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मालकौंस का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मालकौंस की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मालकौंस में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-11
मारू बिहाग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
(वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
11.1	भूमिका
11.2	उद्देश्य तथा परिणाम
11.3	राग मारू बिहाग
11.3.1	मारू बिहाग राग का परिचय
11.3.2	मारू बिहाग राग का आलाप
11.3.3	मारू बिहाग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
11.3.4	मारू बिहाग राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
11.4	सारांश
11.5	शब्दावली
11.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
11.7	संदर्भ
11.8	अनुशंसित पठन
11.9	पाठगत प्रश्न

11.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह ग्याहरवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग मारू बिहाग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग मारू बिहाग का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- मारू बिहाग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- मारू बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- मारू बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- मारू बिहाग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग मारू बिहाग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

11.3 राग मारू बिहाग

11.3.1 मारू बिहाग राग का परिचय

राग - मारू बिहाग

थाट – कल्याण

जाति - औडव-संपूर्ण

वादी - गंधार

संवादी - निषाद

स्वर - दोनों मध्यम, शेष स्वर शुद्ध

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा धैवत

न्यास के स्वर - गंधार, पंचम, निषाद

समय - रात्रि का प्रथम प्रहर

आरोह – ऩी सा ग, मं प, नि सां

अवरोह - सां नि ध प, मं ग मं ग रे सा

पकड़ - ध प मं ग मं ग, रे सा

राग मारू बिहाग, कल्याण थाट का एक राग है। इसके आरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर वर्जित हैं। इसकी जाति औडव-संपूर्ण है। मारू बिहाग का वादी स्वर गंधार तथा संवादी स्वर निषाद है। इस राग में दोनों मध्यम प्रयुक्त होते हैं तथा इसका गायन/वादन समय रात्रि का प्रथम प्रहर माना गया है। मारू बिहाग का आरम्भ षड्ज की अपेक्षा मंद्र निषाद में किया जाता है तथा रिषभ आरोह में वर्जित रहता है, जैसे. ऩि सा ग मं। तीव्र मध्यम का प्रयोग आरोह-अवरोह में किया जाता है जैसे - सां नि ध प, मं प, मं ग मं ग या मं प मं ग। इसके शुद्ध मध्यम का आरोह में केवल षड़ज के साथ किया जाता है जैसे - ऩी सा म ग मं प। मारू बिहाग के अवरोह में रिषभ तथा धैवत स्वर अल्प हैं इसलिए अवरोह करते समय पहले गंधार तथा निषाद पर रूका जाता है। फिर रिषभ तथा धैवत का स्पर्श करते हुए षड्ज तथा पंचम पर आते हैं, जैसे - सां नि, धप, मं प मं ग मं ग रेसा। अवरोह में मं ग मं ग स्वरों की संगति प्रमुख रूप से लगती है।

11.3.2 मारू बिहाग राग का आलाप

- सा ऩी ऩी सा, ऩी सा रे सा ऩी ऩी सा
- सा ऩि ध़ प़, प़ ऩी ऩी सा, सा ऩि सा ग, रे सा,
- सा म, ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा सा
- ऩी सा ग ग मं मं प, प, प, मं ग मं ग रे सा
- सा म, ग मं मं प, मं प ध प, प, मं प मं ग मं प, प
- मं प ध प, नी ध प, प नि नी सां, सां, रें सां
- नी सां रें सां, नी ध प नी नी सां गं रें सां, सां ग मं मं पं मं गं मं गं रें सां, सां,
- सां नी ध प, मं प मं ग मं ग रे सा ऩी ऩी सा, सा

11.3.3 मारू बिहाग राग   द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: मारू बिहाग   **ताल: तीनताल**   **लय: द्रुत लय**

x				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
								सा	मम	ग	म॑	-	प	-	म॑
								दा	दिर	दा	रा	ऽ	दा	ऽ	रा
प	-	-	म॑	ग	रे	सा	ऩी								
दा	ऽ	दा	रा	दा	रा	दा	रा								
अन्तरा															
								ग	म॑म॑	प	नि	सां	निनि	ध	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
सां	-	नि	सां	गं	रेंरें	सां	सां								
दा	ऽ	दा	रा	दा	दिर	दा	रा								
								नि	सांसां	नि	ध	प	धध	म॑	प
								दा	दिर	दा	रा	दा	दिर	दा	रा
ग	म॑म॑	धप	म॑म॑	ग-	गरे	-रे	सा-								
दा	दिर	दिर	दिर	दाऽ	रदा	ऽर	दाऽ								

11.3.4 मारू बिहाग राग के तोड़े

ऩीसा	गम॑	साग	म॑प	गम॑	पनी	म॑प	नीसां
पनी	सारें	रेंसां	नीध	सांनी	धप	नीध	पम॑
धप	म॑ग	पम॑	गरे	म॑ग	रेसा		

ऩीसा	रेरे	सांनी	धप	म॑प	म॑प	धप	धप
ऩीसा	गम॑	प-	--	ऩीसा	गम॑	प-	--
ऩीस	गम॑						

साऩी	धप	म॑प	म॑ग	म॑ग	रेस	ऩीसा	गम॑
नीनी	धप	म॑प	धप	म॑प	म॑ग	म॑ग	रेसा

ऩीसा	गम॑	पम॑	गम॑	गम॑	पनी	सांनी	धप
म॑प	नीसां	सांनी	धप	ऩीसा	गम॑	प-	--
ऩीसा	गम॑	प-	--	ऩीसा	गम॑		

ऩीऩी	ऩीसा	सासा	गग	गम॑	म॑म॑	पप	पनी
नीनी	सांसां	सांनी	नीनी	धध	धप	पप	म॑म॑
म॑ग	गग	रेरे	रेसा	सासा			

सासा	साम॑	म॑म॑	गग	गप	पप	म॑म॑	म॑नी
नीनी	पप	पसां	सांसां	सांसां	सांनी	नीनी	पप
पम॑	म॑म॑	नीनी	नीप	पप	म॑म॑	म॑ग	गग

● ऩीसा	ऩीसा	गसा	गसा	गम॑	गम॑	गप	म॑प	म॑प
नीप	नीप	नीसां	सांनी	सांनी	पनी	पनी	पम॑	पम॑
पम॑	गम॑	गम॑	गरे	गरे	गरे	साऩी	साग	म॑प
नीसां	--	--	ऩीसा	गम॑	पनी	सां-	--	ऩीस
गम॑	पनी	सां--	--					

● ऩीसा	साग	ऩीसा	साग	ऩीसा	ऩीसा	गम॑
पम॑	गम॑	गम॑	म॑प	गम॑	म॑प	गम॑
गम॑	पनी	सांनी	धप	पनी	नीसां	पनी
नीसां	पनी	पनी	सारें	रेंसां	नीसां	गरें
सारें	रेंसां	नीध	सांनी	धनी	म॑ग	रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 मारू बिहाग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ग

ख) नि

ग) म

घ) ध

11.2 मारू बिहाग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

11.3 मारू बिहाग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का प्रथम प्रहर

घ) दोपहर

11.4 मारू बिहाग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

11.5 मारू बिहाग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) रे

ख) प

ग) नी

घ) सा

11.6 मारू बिहाग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) भैरव

ख) कल्याण

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

11.7 मारू बिहाग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि सां ध प, म॑ ग

ख) म॑ ध सां नि ध प, म॑

ग) ध प म॑ ग म॑ ग रे

घ) ध नि सां नी ध म ग

11.8 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 9

घ) 1

11.9 मारू बिहाग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

11.10 मारू बिहाग राग, बिहाग तथा पूरिया रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

11.4 सारांश

मारू बिहाग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। मारू बिहाग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाई जाती है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

11.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।

- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

11.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ख)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: ख)

11.7 उत्तर: ग)

11.8 उत्तर: घ)

11.9 उत्तर: क)

11.10 उत्तर: ख)

11.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

11.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

11.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग मारू बिहाग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग मारू बिहाग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग मारू बिहाग में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग मारू बिहाग में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-12
वृंदावनी सारंग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत (वादन के संदर्भ में)

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
12.1	भूमिका
12.2	उद्देश्य तथा परिणाम
12.3	राग वृंदावनी सारंग
12.3.1	वृंदावनी सारंग राग का परिचय
12.3.2	वृंदावनी सारंग राग का आलाप
12.3.3	वृंदावनी सारंग राग की द्रुत गत/रजाखनी गत
12.3.4	वृंदावनी सारंग राग के तोड़े
	स्वयं जांच अभ्यास 1
12.4	सारांश
12.5	शब्दावली
12.6	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
12.7	संदर्भ
12.8	अनुशंसित पठन
12.9	पाठगत प्रश्न

12.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह बारवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग वृंदावनी सारंग के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग वृंदावनी सारंग का आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजा सकेंगे।

12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- वृंदावनी सारंग राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- वृंदावनी सारंग राग के आलाप, द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग वृंदावनी सारंग के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

12.3 राग वृंदावनी सारंग

12.3.1 वृंदावनी सारंग राग का परिचय

थाट – काफ़ी

जाति - औडव-औडव

वादी - रिषभ

संवादी – पंचम

स्वर - दोनों निषाद (नि, <u>नि</u>) तथा अन्य स्वर शुद्ध

वर्जित- गंधार तथा धैवत

न्यास के स्वर – रिषभ, पंचम, षड्ज

समय – दिन का तीसरा प्रहर

आरोह - ऩि सा रे, म प, नि सां

अवरोह- सां <u>नि</u> प, म रे, सा

पकड़ - रे म प <u>नि</u> प, म रे, प म रे, ऩि सा, सा

यह काफी थाट का राग है। इसकी जाति औडव-औडव है। गंधार तथा धैवत वर्जित स्वर माने जाते हैं। वृन्दावनी सारंग में रिषभ वादी तथा पंचम संवादी है। इस राग में दोनों निषाद प्रयुक्त होते हैं। इसका समय दिन का तीसरा प्रहर माना गया है। इस राग का स्वरूप इतना सरल तथा मधुर है कि कई वर्षों से इस राग की गिनती शास्त्रीय संगीत के कुछ सर्वाधिक प्रचलित रागों में होने लगी है। ध्रुपद, धमार, ख्याल, भजन, गीत लगभग सभी शैलियों में इसका प्रयोग हुआ है। इस राग के अत्यधिक प्रचलित होने के कारण ही पं. ओंकार नाथ ठाकुर इसे केवल 'सारंग' कहना ही उचित मानते थे। इस राग में कुछ परिवर्तन कर विद्वानों ने कई राग बनाए जैसे लंकादहन सारंग, सामंत सारंग, सूर सारंग आदि।

वृंदावनी सारंग में रिषभ एक महत्वपूर्ण स्वर है। इस स्वर पर विभिन्न स्वरावलियां ले कर न्यास किया जाता है जैसे - म रे, प म रे, नि प म रे, आदि। इस राग में अवरोह करते समय स्वरावलियों को अधिकतर रिषभ पर खत्म किया जाता है जैसे- नि प म रे, म रे, सा, ऩि सा रे सा। रिषभ की दूसरी विषेषता यह है कि इसे मध्यम का कण लेकर बजाया जाता है, जैसे रे, मरे, प म रे, रे म रे आदि। राग के आरोह में शुद्ध निषाद (नि) तथा अवरोह में कोमल निषाद(नि) का प्रयोग किया जाता है, जैसे रे म प नि सां, सां नि प आदि। वृन्दावनी सारंग राग में पंचम स्वर पर न्यास किया जाता है। पंचम पर न्यास के बाद रिषभ पर आते हैं, जैसे रे म प, नि प, म नि प, म प, म रे।

वृंदावनी सारंग राग का की तुलना मेघ राग से की जा सकती है। मेघ राग में केवल कोमल निषाद (नी) का प्रयोग होता है जबकि वृंदावनी सारंग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है (वृंदावनी सारंग- प नी सां नी प, मेघ- प नी सां नी प)। मेघ राग में आरोह करते समय ऋषभ पर न्यास करते हैं जबकि वृंदावनी सारंग में अवरोह में ऋषभ पर न्यास किया जाता है (वृंदावनी सारंग- सां नी प म रे, प म रे, म रे, सा, मेघ- प़ ऩी सा रे, ऩी सा रे,)। मेघ राग में स्वरों को गमक रूप में अधिक प्रयोग किया जाता है जबकि वृंदावनी सारंग में गमक का प्रयोग कम किया जाता है। मंद्र सप्तक में मेघ राग में पंचम पर निषाद का कण लिया जाता है जो इस राग का मुख्य अंग है प़ऩीप़। वृंदावनी सारंग और मधुमाद सारंग में केवल निषाद का अंतर है जहां वृंदावनी सारंग में दो निषादों का प्रयोग होता है वही मधुमाद सारंग में केवल कोमल निषाद का प्रयोग किया जाता है। मधुमाद सारंग में, सारंग अंग का प्रयोग अधिक किया जाता है तथा मेघमल्हार में मलहार अंग का प्रयोग अधिक होता है ।

12.3.2 वृंदावनी सारंग राग का आलाप

1 सा, सा रे सा, सा, ऩी सा ऩी ऩी सा, रे ऽ सा सा

2 ऩी ऩी सा ऽ सा ऩी ऽ सा रे ऽ रे म रे ऽ ऩी सा रे ऽ साऽ

3 सा ऩी ऩी ऽ प़ ऽ प़ ऽ ऽ म़ प़ ऽ प़ प़ ऩी प ऽ

म़ प़ ऩी ऩी सा ऽ सा ऽ

4 ऩी सा $^{\text{म}}$रे म म प ऽ ऽ प म रे ऽ म रे ऽ रे

म प ऽ ऽ म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

5 $^{\text{म}}$रे म म प ऽ ऽ प ऽ म प नी प ऽ प ऽ म म प ऽ

प नी प ऽ नी प नी प म रे ऽ रे म रे ऽ ऩी ऩी सा ऽ

6 $^{\text{म}}$रे म प नी नी ऽ सां ऽ सां ऽ नी सां रें ऽ रें मं

मं रें ऽ रें सां

7 नी सां रें मं मं पंऽ पंऽ मं रेंऽ मं रें नी नी सां ऽ सां

8 सां नी प ऽ नी सां नी प ऽ म प ऽ म रे ऽ प

म रे ऽ नी़ ऩी सा ऽ सा ऽ

12.3.3 वृंदावनी सारंग राग   द्रुत गत/रजाखनी गत

राग: वृंदावनी सारंग   **ताल: तीनताल**   **लय: द्रुत लय**

X				2				0				3			
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
स्थाई															
											रेम	रे	सासा	ऩीसा	रेसा
											दिर	दा	दिर	दिर	दिर
रे	रे	सा	ऩीसा	रे	पम	प	म	रेम	रे	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दिर	दा	रा					
अन्तरा															
											पप	म	मम	प	नीप
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
नी	नी	सां	सांसां	नी	सांसां	रें	सां	प	नी	प					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा					
											सांसां	नी	सांसां	रें	मं
											दिर	दा	दिर	दा	दिर
रें	नी	सां	नीनी	म	पप	रे	म	रे	ऩी	सा					
दा	दा	रा	दिर	दा	दिर	दा	रा	दा	रा	दा					

12.3.4 वृंदावनी सारंग राग के तोड़े

•	ऩीसा	रेसा	रेम	मप	नीप	नीसां		
	निसां	रेंसां	रेंमं	मंरें	सांरें	सांनीं		
	सांनि	पनि	पम	पम	रेम	रेसा		
•	ऩीसा	सा	रेसा	ऩीसा	सारे	मरे	सासा	ऩीसा
	ऩीसा	सारे	मप	मरे	मरे	सासा	ऩीसा	ऩीसा
	रेम	पनि	सांनि	निप	मरे	मम	रेसा	ऩीसा
•	रेम	पनी	मप	नीसां	पनी	सांरें	निसा	रेंमं
	सांरें	मंपं	पंमं	रेंसां	मंरें	सांनी	रेंसां	निप
	सांनी	पम	निप	मरे	ऩीसा	रेम	प-	--
	ऩीसा	रेम	प-	--	ऩीसा	रेम	प-	--
•	सारे	मम	रेम	पप	मप	नीनी	पनी	सांसां
	नीसां	रेंरें	सांरें	मंमं	मंमं	रेंसां	रेंरें	सांनी
	सांसां	नीप	निनि	पम	पप	मरे	मम	रेसा
•	रेम	रेम	पम	पम	पनी	पनी	पनी	सांनि
	सांनि	सांरें	सांरें	संरें	गंमं	रेंमं	रेंसां	रेंसां
	रेंसां	नीसां	निसां	निप	निप	निप	मप	पम

रेरे मरे साऩी सारे मप -रे मरे साऩी

सारे मप -रे मरे साऩी सा रे मप रे-

- ऩीसा ऩीसा रेसा ऩीसा रेम रेम पम पम

मप मप निसां निसां सांनी नीप नीनी पप

मप मरे रेऩी सासां नीनी पनी निप पम

पम रेरे ऩीसा सांनी नीप नीनि पप मप

मरे रेऩी सा-

- मंमं रेंरें सांसां सांसां नीनी पप मम पप

मम रेरे मम रेरे सासा ऩीऩी प़प़ ऩीसा

- ऩीसा सारे ऩीसा सारे ऩीसा ऩीसा सारे मप मरे

मम पप मम पप मम पम पप नीसां रेंसां

सांनि सांप नीनी सांप नीनी सांप नीप नीसां रेंसां

नीनी पनी सांनी नीप नीनी पप मप मरे साऩी

- रेसा ऩीसा रेम पनी सारें सांनी पम रेसा

- रेम पनी सांनी पम रेम रेसा ऩीसा रेसा

- पप मप मप मरे रेम पम रेम रेसा

ऩीसा रेसा रे- ऩीसा रेसा रे- ऩीसा रेसा

•	रेम	पनी	सां-	रेम	पनी	सां-	रेम	पनी
•	रेम	पनी	सां-	सां-	सां-	--	रेम	पनी
	सां-	सां-	सां-	--	रेम	पनी	सां-	सां-
•	नीनी	पनी	नीप	मप	रेम	रेसा	ऩीसा	रेसा
	ऩीसा	रेम	पनी	पम	मप	नीसां	रेंमं	रेंसां
	मंमं	रेंसां	नीसां	नीप	मप	मरे	सासा	ऩीसा
•	मम	रेसा	ऩीसा	रेसा	ऩीप़	म़प़	ऩीऩी	सा-
	सारे	मरे	मप	मप	नीप	नीसां	नीसां	रेसां
	नीप	मप	मप	नीप	मप	मरे	रेम	पम
	रेम	रेसा	ऩीप़	ऩीसा	ऩीसा	रेऩी	सारे	ऩीसा
•	प़ऩी	सासा	ऩीसा	रेरे	सारे	मम	रेम	पप
	मप	नीनी	पनी	सांसां	नीसां	रेंरें	रेंमं	रेंसां
	नीसां	रेंसां	नीप	मप	मरे	सासा	ऩी-	सा-
•	सांनी	पम	रेम	रेसा	रे -	- -	सांनी	पम
	रेम	रेसा	रे -	- -	सांनी	पम	रेम	रेसा
•	प़ऩी	सारे	ऩीसा	रेम	सारे	मप	रेम	पनी
	मप	नीसां	पनी	सांरें	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीसां

नीनी	पनी	नीप	मप	रेम	पम	रेम	रेसा
ऩीसा	रेसा	रे -	ऩीसा	रेसा	रे-	ऩीसा	रेसा

• रेम	रेम	पम	रेसा	मप	मप	नीनी	पम
नीसां	नीसां	रेंमं	रेंसां	नीप	मप	मप	नीसां
पनी	सारें	सांनी	पप	नीप	मप	पम	रेरे
मरे	सासा	ऩीसा	रेसा	ऩीप	ऩीसा	रेम	रेम

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 वृंदावनी सारंग राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) म

घ) ग

12.2 वृंदावनी सारंग राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) सा

12.3 वृंदावनी सारंग राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) दिन का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

12.4 वृंदावनी सारंग राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) कोई भी नहीं

12.5 वृंदावनी सारंग राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) ग

ख) प

ग) म

घ) सा

12.6 वृंदावनी सारंग राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरव

ग) काफी

घ) तोड़ी

12.7 वृंदावनी सारंग राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) नि ध प, म रे सा

ख) सां नि प, म

ग) नि ध प म नी

घ) सां नी प म

12.8 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

12.9 वृंदावनी सारंग राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल तीन ताल का ही प्रयोग होता है।

क) हां

ख) नहीं

12.10 वृंदावनी सारंग राग, सारंग तथा वृंदा रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

12.4 सारांश

वृंदावनी सारंग राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। वृंदावनी सारंग राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत, विलंबित लय में बजाया जाता है। इसमें तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

12.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- मसीतखानी गत: वादन के अंतर्गत, जराग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो, विलंबित लय में बजाई जाती हो तथा जिसके बोल निश्चित हों (दिर दा दिर दा रा दा दा रा), उसे मसीतखानी गत कहते हैं।

- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- विलंबित लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत धीमी गति मे चलती है तो उसे विलंबित लय कहते हैं।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।

12.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ग)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: ग)

12.7 उत्तर: घ)

12.8 उत्तर: ग)

12.9 उत्तर: ख)

12.10 उत्तर: ख)

12.7 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

12.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग वृंदावनी सारंग का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग वृंदावनी सारंग में द्रुत गत/रजाखनी गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग वृंदावनी सारंग में पांच तोड़ों को लिखिए।

इकाई-13
ताल

इकाई की रूपरेखा

क्रम	विवरण
13.1	भूमिका
13.2	उद्देश्य तथा परिणाम
13.3	चौताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.4	धमार ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.5	रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
13.6	झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि
	स्वयं जांच अभ्यास 1
13.7	सारांश
13.8	शब्दावली
13.9	स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
13.10	संदर्भ
13.11	अनुशंसित पठन
13.12	पाठगत प्रश्न

13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA202PR की यह तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में चौताल, धमार ताल रूपक ताल, झप ताल आदि तालें प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी चौताल, धमार ताल रूपक ताल, झप ताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

सीखने के उद्देश्य

- चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल का परिचय प्रदान करना।
- चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, चौताल, धमार ताल, रूपक ताल, झप ताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

13.3 चौताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	12
विभाग	06
ताली	02
खाली	04

एक ताल 12 मात्रा की ताल है। यह ताल 6 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर सम तथा ताली, पांचवी, नवीं, ग्यारहवीं मात्रा पर ताली तथा तीसरी व सातवीं मात्रा पर खाली रहती है। चौताल पखावज की एक ताल है। इस ताल की मात्रा, संख्या, ताली, खाली आदि सब एक ताल के समान हैं।

ध्रुवपद गायकी के साथ इस ताल का खूब प्रयोग किया जाता है। इस ताल का मृंदग पर स्वतन्त्र वादन भी किया जाता है। इस ताल का वादन खुले हाथों से बोल बजाकर किया जाता है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है।

तालिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन	धाधा	दिंता	किटधा	दिंता	तिटकत	गदिगन
x		**0**		**2**		**0**		**3**		**4**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6
धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
दिंतातिट	कतगदिगन	धाधादिं	ताकिटधा	दिंतातिट	कतगदिगन
0	**3**			**4**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6
धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन
x		**0**		**2**	
7	8	9	10	11	12
धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन	धाधादिंता	किटधा दिंता	तिटकतगदिगन
0		**3**		**4**	

13.4 धमार ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	14
विभाग	04
ताली	03
खाली	01

धमार ताल 14 मात्रा की ताल है। इसके चार विभाग हैं। पहले विभाग में 5 मात्राएँ, दूसरे विभाग में 2 मात्राएँ, तीसरे विभाग में 3 तथा चौथे विभाग में 4 मात्राएँ हाती हैं। पहली मात्रा पर सम, छठी तथा ग्यारहवीं मात्रा पर ताली व आठवीं मात्रा पर खाली होती है। धमार ताल का प्रयोग 'धमार' गायन शैली के साथ होता है। यह ताल पखावज या मृदंग पर बजाई जाती है। यह गम्भीर प्रकृति की ताल है। इस ताल की रचना पखावज के खुले बोलों के आधार पर हुई है।

##ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
क	धि	ट	धि	ट	धा	ऽ	ग	ति	ट	ति	ट	ता	ऽ
x					2		0			3			

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ	कधि	टधि	टधा	ऽग	तिट	तिट	ताऽ
x					2		0			3			

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक	धिटधि	टधाऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
गतिट	तिटता	ऽकधिट	धिटधा	ऽगति	टतिट	ताऽक
0			3			

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
कधिटधि	टधाऽग	तिटतिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तिटताऽ
x					2	

8	9	10	11	12	13	14
कधिटधि	टधाऽग	तिटतिट	ताऽकधि	टधिटधा	ऽगतिट	तिटताऽ
0			3			

13.5 रूपक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं	07
विभाग	03
ताली	02
खाली	01

एक ताल 07 मात्रा की ताल है। यह ताल 3 विभागों में विभक्त है। पहला विभाग 3 मात्राओं का तथा दूसरा व तसरा विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर खाली, चौथी व छटी मात्रा पर ताली होती है। विद्वान मौखिक रूप में प्रथम मात्रा पर खाली मानते हैं, किन्तु क्रिया में उसी पर सम मानते हैं। इस प्रकार ताल रूपक में पहली मात्रा पर सम अथवा खाली दोनों आते हैं। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में

छोटा ख्याल, मध्य लय की गतें, द्रुत गतें, इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। सुगम संगीत इत्यादि में इस ताल का प्रयोग अधिक किया जाता है।

ताललिपि

एकगुण

1	2	3	4	5	6	7
ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
0			**2**		**3**	

दुगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीती	नाधी	नाधी	नाती	तीना	धीना	धीना
0			**2**		**3**	

तिगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीना	धीनाधी	नातीती	नाधीना	धीनाती	तीनाधी	नाधीना
0			**2**		**3**	

चौगुण

1	2	3	4	5	6	7
तीतीनाधी	नाधीनाती	तीनाधीना	धीनातीती	नाधीनाधी	नातीतीना	धीनाधीना
0			**2**		**3**	

13.6 झप ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 10

विभाग 04

ताली 03

खाली 01

झपताल 10 मात्राओं की ताल है। इसमें 4 विभाग हैं। पहले व तीसरे विभाग में 2-2 मात्राएं तथा दूसरे व चैथे विभाग में 3-3 मात्राएं हैं। पहली मात्रा पर सम, छटी मात्रा पर खाली, पहली, तीसरी तथा आठवीं मात्राओं पर ताली है। झपताल मुख्य रूप से तबले पर बजाई जाती है।

ताललिपि

एकगुण

x		**2**			**0**		**3**		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धी	ना	धी	धी	ना	ती	ना	धी	धी	ना

दुगुण

x		**2**			**0**		**3**		
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना	धीना	धीधी	नाती	नाधी	धीना

तिगुण

x		**2**		
1	2	3	4	5
धीनाधी	धीनाती	नाधीधी	नाधीना	धीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
तीनाधी	धीनाधी	नाधीधी	नातीना	धीधीना

चारगुण

x		**2**		
1	2	3	4	5
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना
0		**3**		
6	7	8	9	10
धीनाधीधी	नातीनाधी	धीनाधीना	धीधीनाती	नाधीधीना

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1. चौताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 14

घ) 12

13.2. चौताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 3

ग) 2

घ) 4

13.3. चौताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 7

ग) 11

घ) 10

13.4. चौताल में कितने विभाग होते हैं?

क) 6

ख) 4

ग) 2

घ) 8

13.5. चौताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धीं

घ) तिट

13.6. धमार में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 12

घ) 14

13.7. धमार में कितनी ताली होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

13.8. धमार में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 7

ग) 11

घ) 10

13.9. धमार में कितने विभाग होते हैं?

क) 6

ख) 8

ग) 2

घ) 4

13.10. धमार में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धीं

घ) ट

13.11. रूपक में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 8

ख) 10

ग) 6

घ) 7

13.12. रूपक में कितनी ताली होती हैं?

क) 3

ख) 2

ग) 1

घ) 4

13.13. रूपक में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 2

ख) 1

ग) 4

घ) 6

13.14. रूपक में कितने विभाग होते हैं?

क) 3

ख) 8

ग) 2

घ) 5

13.15. रूपक में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धी

घ) ना

13.16. झप ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 8

ख) 12

ग) 6

घ) 10

13.17. झप ताल में कितनी ताली होती हैं?

क) 3

ख) 2

ग) 1

घ) 4

13.18. झप ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 5

ख) 6

ग) 4

घ) 7

13.19. झप ताल में कितने विभाग होते हैं?

क) 4

ख) 8

ग) 2

घ) 5

13.20. झप ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धी

घ) ना

13.7 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में एक ताल तथा झप ताल विशेष रूप से प्रयोग की जाती हैं। एक ताल 12 मात्रा तथा झप ताल 16 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

13.8 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

13.9 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 उत्तर: घ)

13.2 उत्तर: ग)

13.3 उत्तर: ख)

13.4 उत्तर: क)

13.5 उत्तर: घ)

13.6 उत्तर: घ)

13.7 उत्तर: ग)

13.8 उत्तर: ख)

13.9 उत्तर: क)

13.10 उत्तर: घ)

13.11 उत्तर: घ)

13.12 उत्तर: ग)

13.13 उत्तर: ख)

13.14 उत्तर: क)

13.15 उत्तर: घ)

13.16 उत्तर: घ)

13.17 उत्तर: ग)

13.18 उत्तर: ख)

13.19 उत्तर: क)

13.20 उत्तर: घ)

13.10 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.11 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

13.12 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. चौताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. झप ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. धमार ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. रूपक ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 5. चौताल, की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 6. धमार ताल की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 7. रूपक ताल की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 8. झप ताल की एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण को हाथ पर प्रदर्शित करें तथा बोलकर बताइए।

महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग मालकौंस का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 2. राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 3. राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग मालकौंस का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 5. राग वृंदावनी सारंग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 6. राग मारू बिहाग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. चौताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 8. झपताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 9. धमार ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 10. रूपक ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।